हिंदी त्रैमासिक
पहचान
देश से हम, हमसे देश

ISSN 2815-8326

वर्ष 3, अंक 3, जनवरी-मार्च 2025, पृष्ठ संख्या 32
प्रधान संपादक : प्रीता व्यास

आवरण चित्र - संजय दत्त शर्मा

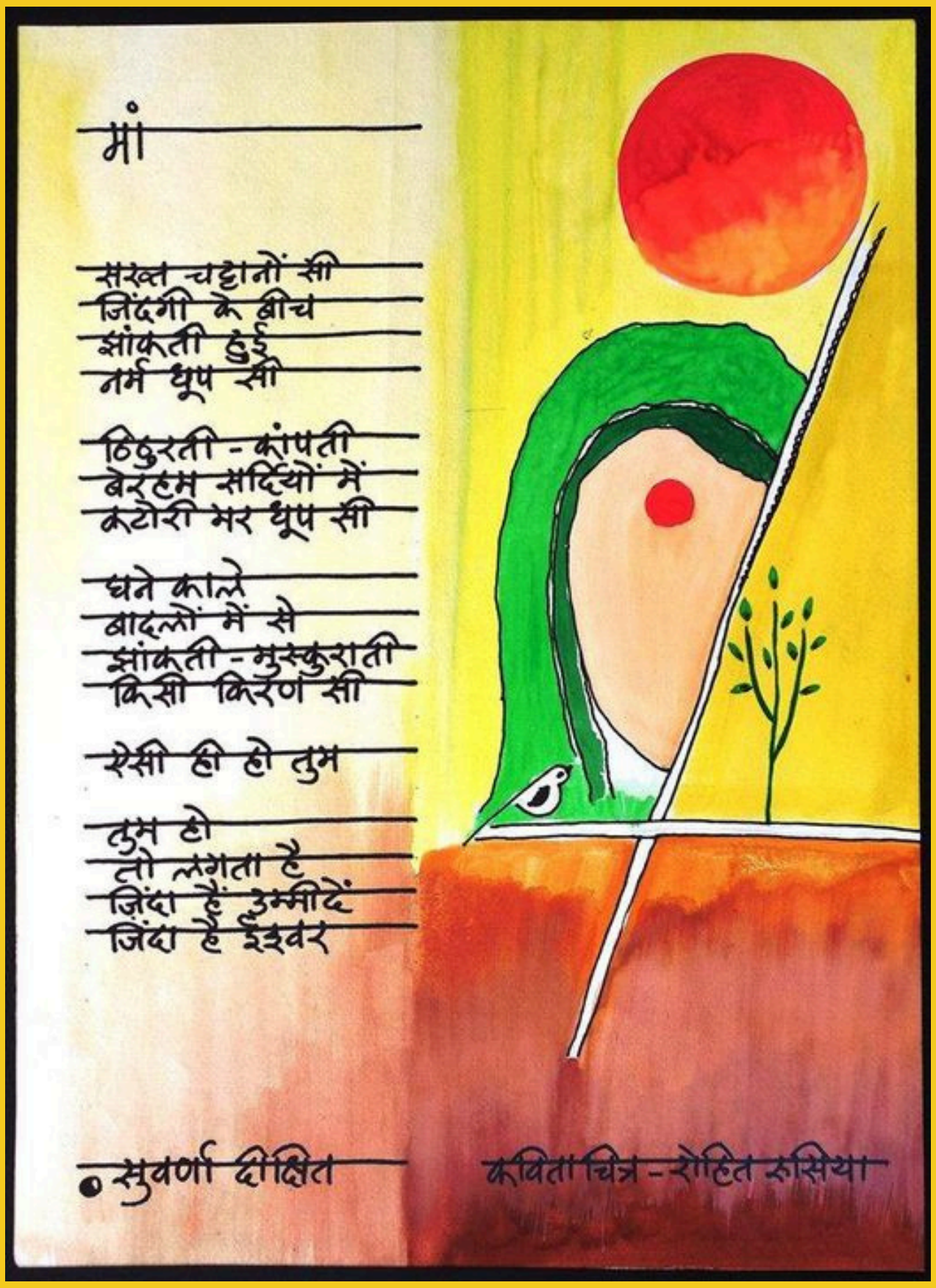
मां
सख्त चट्टानों सी
जिंदगी के बीच
झांकती हुई
नर्म धूप सी
ठिठुरती - कांपती
बेरहम सर्दियों में
कटोरी भर धूप सी
घने काले
बादलों में से
झांकती - मुस्कुराती
किसी किरण सी
ऐसी ही हो तुम
तुम हो
तो लगता है
जिंदा हैं उम्मीदें
जिंदा है ईश्वर
• सुवर्णा दीक्षित
कविता चित्र - रोहित रूसिया

हिंदी त्रैमासिक
पहचान
देश से हम, हमसे देश

संस्थापक/ प्रधान संपादक
प्रीता व्यास

सलाहकार संपादक
रोहित कृष्ण नंदन

ले आउट / ग्राफ़िक्स
प्रिया भारद्वाज

कवर पेज
संजय दत्त शर्मा

प्रकाशक
पहचान

आकलैंड, न्यूज़ीलैंड

editor@pehachaan.com

डिस्क्लेमर

पत्रिका में प्रकाशित लेख, रचनाएं, साक्षात्कार लेखकों के निजी विचार हैं, उनसे प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं. रचनाओं की मौलिकता के लिए लेखक स्वयं ज़िम्मेवार है. कुछ चित्र और लेखों में प्रयुक्त कुछ आंकड़े इंटरनेट वेबसाइट से संकलित किए गए हो सकते हैं.

दो शब्द

"जो गीत सिर्फ़ तुम्हारे लिए गाया गया,
उसे सुर, राग, ताल की कसौटी पर मत कसना.
प्रेम वहीं कहीं होगा.
बाक़ी तो कला है,
जो कि दुनिया में बहुत है."

गीत चतुर्वेदी की पंक्तियाँ हैं ये जो नए साल की शुभकामनाओं के साथ आपको सौंप रही हूं. "पहचान" में अपनी मिट्टी, जड़ों, खाद, हवा, पानी के प्रति यही प्रेम आपको अभिव्यक्त होता मिलेगा. इसे सिर्फ शैली, व्याकरण, शुद्धि, कलेवर की कसौटियों पर मत कसना, उसके लिए बहुत पत्रिकाएं हैं. ये आपकी पत्रिका है और आपके प्रेम के बिना अधूरी है.

प्रेम से याद आया रंगों का फागुनी उत्सव जिसकी धज ही न्यारी है. मेरे दादाजी (विंध्यकोकिल भैया लाल जी व्यास) बताया करते थे कि किस तरह सब एक-दुसरे को गुलाल टीका किया करते थे, लाल या गुलाबी गुलाल और रंग होता था बड़े-बड़े हौदों में रात भर भिगोये हुए टेसू के फूलों का रंग, सुगंधित केसरिया-सा रंग. फिर कान्हा और राधा की होली के वर्णन, ब्रज की लट्ठमार होली हमेशां हैरान करती.

मकर संक्रांति का स्नान, फिर वसंत पंचमी पर देवी सरस्वती का आराधन फिर फागुन की आहट. "हम तो हैं परदेस में देस में निकला होगा चांद" कीतर्ज पर सारी बातों को याद करते हैं फिर देस से कोई बताता है कि अब तो सब बदलता जा रहा है. सारे उत्सव ऐसे हो गए हैं मानो आत्मा के बिना शरीर बचा हो. हर जगह हर बात पर सिर्फ शोर. मन व्यथित होता है फिर पूरी ऊर्जा बटोर कर इस संकल्प के साथ जुट जाता है "पहचान" के पन्ने सजाने कि शायद आत्मा के चिन्ह संजो सकूं.

मेरे श्रम और संकल्प को आपके साथ की ऊर्जा की महती आवश्यकता है. "पहचान" से जुड़िये और जुड़े रहिये. 2025 आप सबके लिए मंगलमय हो.

प्रीता व्यास

इस अंक में ...

पाठकीय प्रतिक्रियाएं		5
आलेख		
जहां जन्मे राम और कृष्ण	हरी राम यादव	6-9
वसंत पंचमी: प्रकृति के परिवर्तन की आहट	प्रवीणा त्रिपाठी	10-11
वृद्ध कौन?	गीत चतुर्वेदी	12
व्यंग्य		
इस बार गणतंत्र दिवस पर	लतीफ़ घोंघी	13-14
व्यक्तित्व		
जागो फिर एक बार महाप्राण	प्रकाश उदय	15-16
लोक कथा		
जलांध	गीता गैरोला	17-18
कहानी		
पूर्ण सत्य		19
लोक संस्कृति		
लोक पर्व: खतडवा	डॉ. भूपेंद्र बिष्ट	20-21
ग़ज़ल		
प्रवीण राय		22
नवीन सी. चतुर्वेदी		23
मयंक अवस्थी		24
अजय अज्ञात		25
संस्मरण		
नीतू भैया की न्यूरो लिंग्विस्टिक प्रोग्रामिंग	हर्ष वर्धन गोयल	26-27
बाल कहानी		
चांद में दिखती रोना	(माओरी लोक कथा का प्रीता व्यास द्वारा अनुवाद)	28
होली के लोक गीत		29
पुस्तक समीक्षा	समीक्षक: डॉ. कौशल तिवारी	30
बोध कथा		
पागल कौन		31

मुझे लगता है आपकी पत्रिका पढ़ते-पढ़ते ही मेरी हिंदी सुधरने लगी है. मुझे बहुत सी नई जानकारियां भी मिली हैं आपकी पत्रिका में शामिल लेखों से. कृपया इसे प्रकाशित करती रहें.

अनुराधा शर्मा, आस्ट्रेलिया

निरन्तर साहित्य सेवा में रत, दूर देश में अपनी माटी की खुशबू बिखेरने वाली और हिंदी को पहचान दिलाने वाली मेरी अभिन्न सखी तुझे सलाम करती हूं. प्यार और धन्यवाद जो पत्रिका में मुझे भी स्थान दिया और वह भी दो रचनाओं के साथ.

विनीता गुप्ता, भारत

साहित्य का मुख्य उद्येश्य जीवन को बल और स्वास्थ्य प्रदान करना है. अन्य सभी उद्येश्य इसके नीचे आ जाते हैं. हजारों साहित्यकार केवल इसी भावना से अपना जीवन तक कुर्बान कर देते हैं. उन्हें धेला भी इससे नहीं मिलता. प्रीता भी ऐसी ही सनकी साहित्यकार हैं जिन्होंने खुद को "पहचान" में झोंक दिया है. ज़रूरी नहीं है कि अच्छी भावना से शुरू गया कार्य सरलता से पूर्ण होता चले, रोड़े आएंगे, अवरोध रोकेंगे लेकिन पार उतरती जाएं. "पहचान" की "पहचान" को कोई दबा नहीं सकता.

मनोरमा त्रिवेदी, अमेरिका

पहली बार ये ऑनलाइन पत्रिका देखी. फिर इसके पिछले सारे अंक पढ़े. अत्यंत उत्कृष्ट पत्रिका. चयनित सामग्री सारगर्भित है.

सीताराम परासिया, भारत

विदेशी धरती पर भारत, भारतीयता विशेषकर बुंदेलखंड के साहित्य, कला, संगीत भाषा सबका झंडा ऊंचा रखने वाली भारत की बेटी प्रीता को उनके इस श्रम की सराहना सहित सुखद भविष्य की कोटि-कोटि शुभकामनाएं

ओम प्रकाश दीक्षित, भारत

राजेंद्र रंजन चतुर्वेदी जी का लेख "देवी पूजा का इतिहास" अच्छा लगा. आपकी पत्रिका में स्तरीय सामग्री होती है. मैं बुंदेलखंड का रहने वाला हूं, आपके इन प्रयासों के लिए कहना चाहूंगा कि-"अपनी संस्कृति, अपनी बोली खों जिंदा राखबे के लानें भौत त्याग और तपस्या करनै पड़ है, अपनी माटी के काजें जो कछु नौनौ कर रईं आप, आबे बारो समय जस गैहै."

डॉ. अभिनव शरण, भारत

बहुत-बहुत बधाई हो जी. "पहचान" का अक्टूबर-दिसंबर 2024 अंक देखा. सुंदर और ज्ञानवर्धक रचनाएं पढ़ने को मिली हैं. सुंदर संपादन और प्रिया भारद्वाज जी का सुंदर ले आउट, पृष्ठ सज्जा. मेरी रचनाओं को स्थान दे कर मान बढ़ाया इसके लिए आभारी रहूंगा.

सोमनाथ गुप्ता, न्यूज़ीलैंड

जहां जन्मे राम और कृष्ण

(उत्तर प्रदेश स्थापना दिवस पर विशेष लेख)

हरी राम यादव

उत्तर प्रदेशजनसंख्या की दृष्टि से देश का सबसे बड़ा राज्य और क्षेत्रफल (2,38,566 वर्ग किलोमीटर) के आधार पर देश का चौथा सबसे बड़ा राज्य है. उत्तर प्रदेश देश के उत्तर में स्थित है और इसके उत्तर में नेपाल व उत्तराखंड, दक्षिण में मध्य प्रदेश, पश्चिम में हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान तथा पूर्व में बिहार तथा दक्षिण-पूर्व में झारखंड व छत्तीसगढ़ राज्य हैं.

उत्तर प्रदेश का ज्ञात इतिहास लगभग 4000 वर्ष पुराना है. यदि हम आधुनिककाल की बात करें तो 1833 में यह पश्चिमोत्तरप्रांत के नाम से जाना जाता था. 1856 ई. में ईस्ट इंडिया कम्पनी ने इसका नाम बदल कर आगरा एवं अवध संयुक्त प्रांत कर दिया. 1902 ई॰ में फिर इसका नाम बदलकर संयुक्त प्रांत रखा गया. सन् 1947 में संयुक्त प्रांत, नवस्वतंत्र भारतीय गणराज्य की एक प्रशासनिक इकाई बना. दो वर्ष बाद इसकी सीमा के अंतर्गत स्थित, टिहरी गढ़वाल और रामपुर के स्वायत्त राज्यों को संयुक्त प्रांत में शामिल कर लिया गया.

1950 में संविधान के लागू होने के साथ ही 24 जनवरी सन् 1950 को इस संयुक्त प्रांत का नाम उत्तर प्रदेश रखा गया, जो कि अब भी उत्तर प्रदेश तथा यूपी के नाम से जाना जाता है.

इस प्रदेश को मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम तथा योगेश्वर श्रीकृष्ण जैसे महापुरुषों की जन्मस्थली होने का भी गौरव प्राप्त है. गंगा, यमुना-घाघरा जैसी कई पवित्र नदियों के आलावा बेतवा, केन, चंबल, गोमती, सोन, तमसा, बिसुही आदि नदियां भी उत्तरप्रदेश के भू-भाग से हो कर बहती हैं. प्रदेश की राजधानी लखनऊ है. उत्तरप्रदेश में कुल 75 जिले और 18 मंडलहै.

यदि हम इसके आधुनिक इतिहास की बात करें तो 1857 की क्रांति का बिगुल इसी प्रदेश की धरती से फूंका गया था. 1857 की क्रांति नायक मंगलपांडे, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, बहादुरशाह जफर, झलकारीबाई, ऊदा देवी, अवध की बेगम हज़रत महल, बख्त खान, नानासाहेब, मौलवी अहमदुल्लाशाह,

राजा बेनीमाधव सिंह, गंगा बख्शरावत, चंद्रशेखर आजाद, राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खां, ठाकुर रोशन सिंह जैसे वीरों की जन्मस्थली उत्तर प्रदेश की धरती ही है. इस प्रदेश के इन वीरों के खून में धधकती ज्वाला की चिंगारी से ही अंग्रेजों की सत्ता जलकर भस्म हुई.

इसी प्रदेश की धरती पर जन्मे नायक छत्ता सिंह की वीरता की कायल ब्रिटिश सरकार थी. जिसने उनकी वीरता और साहस के लिए द्वितीय विश्व युद्ध में उन्हें विक्टोरिया क्रॉस से सम्मानित किया. 1948 के भारत-पाक युद्ध में पाकिस्तान की सेना के समक्ष अद्वितीय वीरता का प्रदर्शन करने वाले नायकजदुनाथ सिंह, इसी उत्तर प्रदेश के जनपद शाहजहांपुर के निवासी थे.

सी क्यू एमएच अब्दुल हमीदका गांव धामपुर उत्तर प्रदेश के ही गाजीपुर जिले में है, जिन्होंने 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध में पैटन टैंकों की कब्रगाह बना डाली थी.

अपने कर्तव्यों को पूरा करते हुए अपनी पोत के साथ जल समाधि लेने वाले महावीर चक्र विजेता कैप्टनमहेन्द्र नाथ मुल्लाइ सी प्रदेश के गोरखपर की भूमि पर पले-बढ़े थे. इसी प्रदेश के बेटों कैप्टन मनोजकुमार पांडे, सूबेदार मेजर योगेन्द्र सिंहयादव ने कारगिल की अजेय पहाड़ियों पर चढ़कर दुश्मन की गर्दन मरोड़ी थी.

देश में अब तक लड़े गये युद्धों में अपनी वीरता, शौर्य का लोहा मनवाने वाले वीरों में चार परमवीर चक्र विजेता इसी प्रदेश के हैं जबकि अब तक देश में कुल 21 वीरों को परमवीरचक्र दिए गये है. 1 विक्टोरियाक्रास, 20 महावीर चक्र, 94 वीर चक्र, 6 अशोकचक्र, 27 कीर्ति चक्र, 126 शौर्य चक्र, 680 सेना मेडल प्राप्त करने वाले भी इसी प्रदेश की माटी के लाल हैं. हॉकी के जादूगर कहे जाने वाले मेजर ध्यानचंद इसी प्रदेश के प्रयागराज के निवासी थे.

जहां उत्तर प्रदेश देश का सबसे ज्यादा जनसंख्या वाला राज्य है वहीं वर्तमान में इसने देश को सैन्य सेवा के क्षेत्र में बहुत बडी मानवशक्ति दी है. इस समय लगभग 1,70,000 लोग सेना, वायु सेना और नौसेना में अपनी सेवाएं दे रहे हैं. वर्तमान समय में तीनों सेनाओं में अपनी सेवा दे चुके सैनिकों की संख्या लगभग चार लाख अस्सी हज़ार है. देश के 66 कैंटोनमेंट बोर्ड में से 14 कैंटोनमेंट बोर्ड इसी प्रदेश की धरती पर स्थितहैं.

इसी प्रदेश के गाजीपुर जिले का गांव गहमर एशिया का सबसे बड़ा गांव है, जिसकी कुलजनसंख्या 1.27 लाख है, जहां पर वर्तमान समय में लगभग 12 हजार लोग सेना में सेवारत हैं. इस गांव में लगभग 15 हजार सेवानिवृत्त सैनिक हैं.
बुलंदशहर का सैदपुर गांव जिसकी कुल आबादी लगभग 21, 000 हजार है. सरकारी आंकड़ों के अनुसार इस गांव में 2450 लोग पेंशनले रहे हैं. वर्तमान समय में लगभग 100 लोग सेना में सेवारत हैं. इस सैनिकों के गांव में सिपाही से लेकर मेजर जनरल के रैंक तक लोग निवास करते हैं.

यमुना के आंचल में बसा सैनिकों का गांव रुदमुली जनपद आगरा की बाह तहसील में स्थित है.जम्मू और कश्मीर के आर एस पुरा सेक्टर का नाम जिन ब्रिगेडियर रणवीर सिंह के नाम पर रखा गया है, वह ब्रिगेडिय ररणवीर सिंह इसीगांव के रहने वाले थे. प्रथम विश्व युद्ध में इस गांव के 82 सैनिकों ने हिस्सा लिया और 6 लोग वीरगति को प्राप्त हो गये थे तथा द्वितीय विश्व युद्ध में 90 सैनिकों ने भाग लिया और 4 लोग वीरगति को प्राप्त हो गये.

1947- 48 के भारत-पाकिस्तान युद्ध में इस गांव के 52 सैनिकों ने भाग लिया और 2 लोग मातृभूमि की रक्षा करते हुए वीरगति को प्राप्त हो गये. सन् 1971 के भारत-पाक युद्ध में जनपद आगरा की बाह तहसील के कुल 350 जवानों ने युध्द लड़ा था जिसमें से 88 सैनिक इसी गांव के थे.

आगरा एक्सप्रेसवे, यमुना एक्सप्रेस वे और पूर्वांचल एक्सप्रेसवे पर 3-3 एयरस्ट्रिप वाला यू पी देश का पहला राज्य है जबकि हमारे पड़ोसी देश पाकिस्तान के पास पूरे देश में दो ही एक्सप्रेसवे रनवे हैं. युद्ध के समय हमारी वायुसेना इनका इस्तेमालकर सकती है. उत्तर प्रदेश की धरती ऋषियों-मुनियों की धरती रही है. इसी प्रदेश की धरती पर ऋषि अगस्त्य, मुनि भारद्वाज़, महर्षिदुर्वासा, भृगु, गुरूवशिष्ठ हुए. इसी प्रदेश की धरती पर सत्यवादी राजा हरिशचंद्र हुए. जिनका नाम पूरी दुनिया में ईमानदारी के लिए मुहावरा बन गया है.

मैनपुरी इसी प्रदेश का जनपद है जहां परच्यवन ऋषि हुए थे जिनका बनाया हुआ च्यवनप्राश पूरे देश में सेहत कापर्याय बना हुआ है.

सारनाथ उत्तर प्रदेशमें स्थित है जहां भगवान गौतमबुद्ध ने अपना पहला उपदेश दिया. सारनाथ का स्तंभ आज भारत गणराज्य का राज्यचिन्ह है.

समाज को नयी राह दिखाने वाले महर्षि वाल्मीकि, महर्षि वेदव्यास, सूर, तुलसी, कबीर, रसखान, भारतें दुहरिश्चंद्र, आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी, आचार्यराम चन्द्र शुक्ल, प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला, सुमित्रानंदनपंत, मैथिलीशरण गुप्त, सोहन लाल द्विवेदी, हरिवंश राय बच्चन, महादेवीवर्मा, राही मासूमरजा, हजारी प्रसादद्विवेदी, अज्ञेय जैसेमहान कवि और लेखक इसी प्रदेश के हैं.

अब तक हुए कुल 15 प्रधानमंत्रियों में से 7 प्रधानमंत्री इसी प्रदेश ने दिए हैं.
पहले प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू, देश की पहली महिला प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी, देश और उत्तरप्रदेश की पहली महिला मुख्यमंत्री श्रीमती सुचेता कृपलानी इसी प्रदेश के हैं.

अयोध्या, वृंदावन, मथुरा, वाराणसी और प्रयागराज जैसे तीर्थ स्थल इसी प्रदेश में हैं.

तीन कुंभ मेलों में से एक यहीं के प्रयागराज में लगता है. रामायण, महाभारत, रामचरितमानस जैसे ग्रंथ यहां की धरती पर लिखे गये. गंगा, यमुना, सरस्वती, सरयू, तमसा और बिसुही जैसी पवित्र नदियां इसी प्रदेश में बहती हैं. ताजमहल जैसा पर्यटन स्थल इसी प्रदेश के आगरा जिले में स्थित है.

ताले वाला अलीगढ़, चूड़ियों वाला फिरोजाबाद, काष्ठशिल्प वाला सहारनपुर, हैंडब्लाक प्रिंट की चादरों वाला पिलखुवा, साड़ियां तथा रेशमव ज़री का काम वाला वाराणसी, चिकन की कढ़ाई का काम वाला लखनऊ, पैच वर्क वालारामपुर, पीतल के बर्तन वाला मुरादाबाद, टेराकोटा वाला औरंगाबाद, कैंची वाला मेरठ और कालीन के काम वाला भदोही, पूरे विश्व में अपने इत्र की खुश्बू फैलाने वाला कन्नौज़, स्वर्ग के वृक्ष "पारिजात" वाला बाराबंकी इसी प्रदेश में स्थित है.

इसके साथ-साथ पूरे देश के लोगों के मुंह में मिठास घोलने वाली चीनी का 45 प्रतिशत उत्पादन करने वाला देश का पहला राज्य है.
ज्यादा जनसंख्या और कम संसाधनों के कारण गरीब राज्यों में शुमार यह प्रदेश धीरे-धीरे प्रगति की ओर बढ़ रहा है.

पिछले कुछ वर्षों में उत्तरप्रदेश में बहुआयामी गरीबी से बाहर निकलने वाले लोगों की संख्या सबसे ज्यादा गरीब राज्यों में सबसे अधिक 3.43 करोड़ थी.

प्रेरक प्रसंग

स्वाभिमान

विदेशी धरती पर देश के सम्मान को कैसे बरकरार रखा जाता है यह हमें दिवंगत प्रधानमंत्री श्रीमति इंदिरा गांधी जी ने सिखाया था. इंदिरा जी जब प्रधानमंत्री थी तो सोवियत संघ की आधिकारिक यात्रा पर मॉस्को हवाई अड्डे पहुंची उनकी अगवानी करने तत्कालीन राजदूत इंद्रकुमार गुजराल मौजूद थे. इंदिराजी ने देखा कि उनकी अगवानी और स्वागत के लिए प्रधानमंत्री या कोई अन्य समकक्ष मौजूद नहीं है तब उन्होंने गुजराल साहेब को आदेश दिया कि सीधे भारतीय दूतावास ले चलो वहां जाकर उन्होंने दूतावास के कर्मचारियों के परिवार से मुलाकात की.

उधर क्रेमलिन महल में हड़कंप मच गया. वस्तुस्थिति जानकर तत्कालीन प्रधानमंत्री स्वयं भारतीय दूतावास पहुंचे और उन्हें विधिवत सम्मानपूर्वक क्रेमलिन महल ले गए जहां उनका गर्म जोशी से स्वागत हुआ.
तब सोवियत संघ के राष्ट्राध्यक्ष और प्रधानमंत्री ने उनसे क्षमा मांगी तब इंदिरा जी ने जवाव दिया कि "मैं भारत के 600 मिलियन नागरिकों की चुनी हुई प्रधानमंत्री हूं मुझे स्वयं के सम्मान की नहीं वरन अपने देश के नागरिकों के सम्मान की अधिक चिंता है."
ऐसी थी हमारी दिवंगत प्रधानमंत्री श्रीमति इंदिरा गांधी जी जिन्होंने हमेशा देश को आगे रखा.

वसंत पंचमी: प्रकृति के परिवर्तन की आहट

प्रवीणा त्रिपाठी

जब शीतलता घटने लगती है और ताप प्रबल हो जाता है, जब आम्र मंजरियां गुच्छों में अमराई सजाने लगती हैं, जब पुष्प-पुष्प से श्याम भ्रमर कुछ हाल पूछने आते हैं, जब डाल-डाल पर कोयलिया की कूक सुनाई देती है, जब महुए की मादक सुगंध मन को तन को हर लेती है, सखी तब आता है ऋतुराज. सभी ऋतुओं का जो सरताज, हृदय में ले आता उल्लास, दृगन की मिट जाती फिर प्यास.

वसंत ऋतु का वर्णन यूं तो कवियों ने अपनी अपनी सामर्थ्य के अनुसार किया है लेकिन छह ऋतुओं की अग्रणी यह ऋतु प्रकृति के परिवर्तन की आहट लेकर आती है, नव श्रृंगार, नव कलेवर में सजे वसंत का आगमन ही मानव मन को ऊर्जा प्रदान करता है, गेंहूं की सुनहरी होतीं बालियां, सरसों के पीले फूलों से भरे लहलहाते खेत धन-धान्य और समृद्धि का संदेश देते हैं, प्रकृति हमें सिखाती है कि जीवनचक्र क्या है?

पेड़ों पर बूढ़े हो चले पके पीले पत्ते विदा लेते हैं, और नव किसलय अपनी कोंपलों पर अधमुंदी पलकों से निहारते हैं इस पल-पल बदलते संसार को, हज़ारों प्रकार के पुष्प खिलने को आतुर होते हैं ज्यों सजाना चाहते हो धरती को एक सुंदर बाला के रूप में, कनेर, चम्पा, चमेली, गेंदा, गुलाब, रातरानी अपनी सुगंध और रूप से वातावरण महका देते हैं,

शायद प्रकृति का यही रूप देख कवि पद्माकर लिखते हैं-

कूलन में केलिन कछारन में कुंजन में,

क्यारिन में कलिन-कलीन किलकंत है.

कहै पद्माकर परागन में पौन हू में,

पानन में पिकन पलासन पगंत है.

द्वार में दिसान में दुनी में देस-देसन में,

देखो दीप-दीपन में दीपत दिगंत है.

बीथिन में ब्रज में नबेलिन में बेलिन में,

बनन में बागन में बगरो बसंत है.

वसंत केवल ऋतु सौंदर्य ही नही बल्कि संगीत, शिक्षा, संस्कार और संस्कृति की संवाहक भी है. वाग्देवी माता सरस्वती का प्राकट्य दिवस है वसंत ऋतु की पंचमी तिथि, हमारे पुराणों के अनुसार भगवान ब्रम्हा ने जब सृष्टि की रचना पूर्ण कर ली तो उन्हें लगा कि अभी भी कुछ अपूर्णता है और सृष्टि शांत और मूक है तब उन्होंने अपने कमंडल से अभिमंत्रित जल छिड़का जिससे चार भुजाओं वाली एक स्त्री प्रकट हुईं जिनके एक हाथ में वीणा, दूसरे हाथ में पुस्तक, तीसरे हाथ में माला और चौथा हाथ वरमुद्रा में था, ब्रम्हा जी ने देवी को वीणा के तार छेड़ने को कहा और जैसे ही वीणा की मधुर स्वरलहरियां वातावरण में गूंजी, हर ओर उल्लास छा गया, नीरवता समाप्त हो गयी, नदियों ,झरनों, पक्षियों और समस्त जीवमात्र के स्वर फूट पड़े, सभी को वाणी प्राप्त हो गयी तब ब्रम्हा जी ने उन्हें वाणी की देवी सरस्वती कहा.
वसंत पंचमी के दिन से ही छोटे बच्चों को अक्षर ज्ञान कराया जाता है, उनका पट्टिका पूजन किया जाता है. भारतीय साहित्य, संगीत शास्त्र, नृत्य और वादन शास्त्र के ज्ञाता, छात्र और शिक्षक वसंतपंचमी पर मां वीणापाणि की साधना और आराधना करते हैं ताकि उनका ज्ञान सदैव बढ़ता रहे.

वसंत ऋतु, ऋतु परिवर्तन की आहट भी है, क्योंकि वसंत पंचमी के बाद से ही दिन बढ़ने लगते हैं, गर्मी का आरंभ होता है और साथ ही पतझड़ का भी. गर्म हवाएं चलने लगती हैं और खेतों में खड़ी गेंहूं और चना की फसल पकने लगती है.

लोक परंपरा की बात करें तो बुंदेलखंड में वसंत पंचमी दिन होता है मकर संक्रांति को मिट्टी के घोड़ों पर लादी गयी कठारी को उतारने का उसमें भरा हुआ मीठा, शक्कर से बना हुआ गढिया-गुल्ला, सेव, खुरमी, शकरपारे और पैसे कन्याओं में बांट कर सबकी समृद्धि का आशीष मांगा जाता है. हमारी लोक परंपराएं और लोक कथाएं अनंत हैं ये हमारे मानस पटल पर यूं अंकित रह जाती हैं जैसे अभी कल ही की बात हो. हम भविष्य के सपने बुनते अपनी जड़ों से चाहे कितनी ही दूर निकल आये हों, हमारी परंपराओं, संस्कारों और हमारी लोकसंस्कृति ने हमें आज भी बांधे रखा हैं, हम हाथी, घोड़े, बैल, गाय सभी की स्तुति करते हैं.
पेड़ों में पीपल, बरगद, आम, नीम, आंवला, टेसू, बिल्व, पान सबका महत्व है ,हमारी नदियां, तालाब झरने ये सब कहीं न कहीं हमारी आस्था, पूजा और लोक से जुड़े हुए हैं, दरअसल ये सारी सृष्टि एक-दूसरे से जुड़ी हैं, सभी के लिए सभी जरूरी है और जब हम इंसान ये बात समझने लगेंगे तभी सबका अस्तित्व बचा रहेगा. पंचतत्व में समाया है ब्रम्हा का सारा सृजन, ये सार तत्व जानते हुए आइए मनाएं इस बसंत में जीवन का आनंद.

वृद्ध कौन?

गीत चतुर्वेदी

तीन तरह की वृद्धताएं होती हैं:

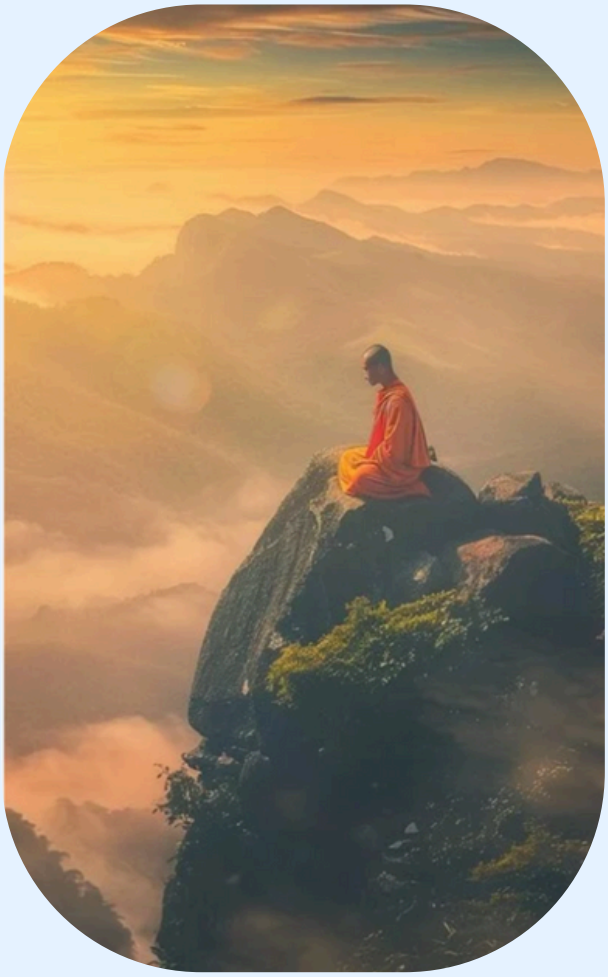

पहला, आयु वृद्ध. जो व्यक्ति उम्र से बूढ़ा हो गया हो. ऐसे लोग बहुतायत में होते हैं क्योंकि सबकी आयु बढ़ेगी, सभी वृद्ध होंगे, लेकिन आयुवृद्ध होने वाला व्यक्ति सर्वश्रेष्ठ भी हो, यह ज़रूरी नहीं. सौ साल की आयु वाला व्यक्ति भी मूढ़ हो सकता है. अर्थात आयु कभी निर्णायक श्रेष्ठता नहीं हो सकती.

दूसरा, तपोवृद्ध. वह व्यक्ति जिसने अपने जीवन में घनघोर तप किए हों. वह भले आयुवृद्ध न हो, लेकिन वह आयुवृद्ध से श्रेष्ठ होगा, क्योंकि भरपूर तप ने उसकी आयु को खरा बनाया होगा. उसने साधारण जीवन न जिया होगा, बल्कि तप से अपने जीवन को यथेष्ट गहराई दी होगी. यहां तप यानी विभिन्न किस्म की साधना.

तीसरा, ज्ञानवृद्ध. वह व्यक्ति जिसने अपने जीवन में भरपूर तप किया हो और उससे ज्ञान भी प्राप्त किया हो. कई लोग तप तो कर लेते हैं, किंतु उससे ज्ञान नहीं प्राप्त कर पाते, इसलिए तपोवृद्ध से भी बेहतर है ज्ञानवृद्ध, क्योंकि उसके पास तप की भी पूंजी है और ज्ञान की भी, जो कि दुर्लभ है. ऐसे व्यक्ति की आयु कम भी हो, तो भी वह श्रेष्ठ होगा, क्योंकि चालीस की उम्र में ही उसने साठ जितना तप कर लिया होगा और अस्सी जितना ज्ञान पा लिया होगा. पैंतीस की उम्र में ज्ञान प्राप्त कर लेने वाले शाक्यमुनि भी ज्ञानवृद्ध ही कहलाएंगे.

इस बार गणतंत्र दिवस पर

लतीफ़ घोंघी

आप चुप हैं. गणतंत्र दिवस पर आप चुप रहें तो मुझे अच्छा नहीं लगेगा.'
'क्या बोलें? समझ लो कि अपनी बोलती बंद है. स्कूल में देशभक्त लोग गणतंत्रदिवस मना रहे हैं. बच्चे परेशान कर रहे हैं- नया ड्रेस सिलवा दो, सफ़ेद जूते खरीद दो, लाल मोज़े ले दो. तीन सौ रुपय की सीधी चपत पड़ गई इस गणतंत्र पर.'
'आज़ादी मिली है तो तीन सौ से नहीं डरना चाहिए आपको. साहबों और इंस्पेक्टरों को हज़ारों रुपया हंसते-खेलते खिला देते हो और बच्चों को नया ड्रेस सिलवा देने के नाम पर इतने उदास हो गए?'

वह चुप हो गए. अपनी दुकान पर रखे सेव-गांठिया के डिब्बों को देखने लगे. दिन भर मिक्चर की पुड़िया लपेटते हैं लोगों के लिए. दुकान पर नमकीन भंडार का इतना बड़ा बोर्ड लगवा रखा है कि बोर्ड देखकर ही सेल्स टैक्स वाला बोर्ड को बाद में, पहले उनको ही नीचे उतार दे. पिछले जनता शासन में उनका जलेबी भंडार था. उधर जनता शासन टूटा और इधर उनकी जलेबी टूट गई. सत्ता आने से जितने उदास जनता पार्टी वाले नहीं हुए थे उससे अधिक उदास वे ड्रेस सिलवाने के नाम पर आज हो रहे थे. उन्हें लग रहा था कि गणतंत्र दिवस पर किये जानेवाले इस फालतू ख़र्च को मेक-अप करने के लिए उन्हें कई किलो सेव-गांठिया तौलना पड़ जाएगा. उनके चेहरे पर फालतू खर्च की पीड़ा सरकारी सोयाबीन तेल में गर्म कड़ाही पर उभरते झाग की तरह उभर रही थी.

अचानक सेव-गांठिया से निकल कर वह बोले- 'हम तो इन मास्टरों और बहनजियों के मारे परेशान हैं. पढ़ाई- लिखाई तो गई भाड़ में, ड्रेस-जूते पर सबका ध्यान केंद्रित हो गया है. आप ही बताइए कि बिना नए ड्रेस के क्या गणतंत्र दिवस नहीं मनाया जा सकता? जूते सफ़ेद होने चाहिए और मोज़े बिल्कुल लाल, आदमी के खून की तरह. दिन भर सेव-गांठिया बेच-बेच कर हमारा खून कितना लाल रह गया है यह सोचने की फ़िक्र किसी को नहीं है. तीन सौ रुपया कमाने के लिए हमें कितनी जोड़-तोड़ करनी पड़ती है, हम ही जानते हैं. बस, हुकुमजारी कर दिया- नया ड्रेस सिलवाकर लाओ, नए जूते लाओ, चारों तरफ लाओ-लाओ. मरे सेव-गांठिया वाला. ऐसा गणतंत्र भी किस काम का.'
मैंने कहा- ' कैसे नागरिक हैं आप? गणतंत्र दिवस पर आपको ख़ुशी नहीं होती?'

वह बोले- 'होती है भइया, बहुत होती है. देख रहे हो ख़ुशी के मारे हमारा वज़न सात किलो कम हो गया है. पिछले गणतंत्र पर पैंसठ किलो था. इस बार रेलवे प्लेटफार्म की मशीन के कथनानुसार हम अट्ठावन किलो के हो गए हैं- जूते-कपड़े का वज़न जोड़कर. सात किलो सूख गए एक साल में.'
'यानी कि आप हर गणतंत्र दिवस पर अपने आपको तौलते हैं?'
'अरे भइया, तौलते क्या हैं, अपनी तसल्ली के लिए देख लेते हैं कि बदन पर इस व्यवस्था के लिए कितना मांस बाकी है. इस महंगाई और भ्रष्टाचार के मारे जितना बच जाए अच्छा है.'
मैंने व्यंग्य प्रसंग का छोर पकड़ लिया था. बातों का सिलसिला जारी रखते हुए मैंने कहा- 'शरीर पर ज़्यादा मांस बचा कर क्या करोगे? जितना ज़्यादा मांस होगा, उतने ही चील-कौवे आपके पास मंडराएंगे.'
वह बोले- 'एकसाल में सात किलो मांस चील-कौवे नोच गए, इस पर भी आपको संतोष नहीं हुआ? मैं पूछता हूं कि क्या हम ही मिले हैं आपको इस बार गणतंत्रदिवस पर व्यंग्य के लिए? थोड़ा बहुत व्यंग्य तो हम भी समझते हैं, गुरु जगन्नाथप्रसाद मिश्र के इलाके के हैं.'
'यानी कि चील-कौवे का अर्थ समझ गए आप?'

'आपने हमें इतना मूर्ख समझ लिया है? चील-कौवों के बीच जी रहे हैं और मतलब नहीं समझेंगे क्या?'
'समझ गए तो हमें बता दीजिये कि किस डिपार्टमेंट के हैं ये चील-कौवे?'
'अरे साहब, सभी डिपार्टमेंट में भरे पड़े हैं. ये तो गिद्धों की बस्ती है. सरकार ने पाल रखे हैं हमारे लिए. अपनी दुकान का बड़ा बोर्ड देखकर कल एक सेल्सटैक्स ऑफिस का चील उड़ता हुआ आया और दुकान पर बैठ गया. देखने लगा हमाराबदन. हमने कहा- नोच लो दादा तुम भी दो-चार सौ ग्राम नोच लो, जब तक बदन में मांस है ले जाओ.'
'गणतंत्र दिवस पर इतने ऊंचे विचार आपके मन में कहां से आ रहे हैं?'
'इस प्रजातंत्र में सात किलो वज़न कम हो जाने के बाद ऊंचे विचार नहीं आयेंगे तो क्या घटिया विचार आयेंगे? सच कहें तो हमारी आत्मा दुखी है यह देखकर और जब आत्मा दुखी होती है तो ऊंचे विचार ही आते हैं.'
'ये आत्मा कहां से आ गई बीच में इस गणतंत्र दिवस पर?'
'आदमी का वजन गिर जाने के बाद शरीर में आत्मा ही शेष रह जाती है.'
'कैसी है आपकी आत्मा? आपकी आत्मा को दुखी होने के अलावा और कोई काम नहीं है? लालकिले पर फहराता झंडा देखकर भी आपकी आत्मा प्रसन्न नहीं होती?'

उन्होंने आज के अखबार को फाड़कर चार टुकड़े किये और एक ग्राहक के लिए ढाई सौ ग्रामसेव-गांठिया तौलते हुए कहा-' चालीस रुपय किलो का तेल खाने के बाद आत्मादुखी ही होगी. दुखी लोगों की आत्मा को कितना भी खंगालो उसके अंदर से केवल दु:ख ही निकलेगा.'
'यानी कि आप आदमी नहीं एक दुखी आत्मा हैं?'
'हां भइया, वही समझ लो. तुम्हारे पेट में कुछ दर्द हो तो साफ़-साफ़ बताओ. दो-चार सौ ग्राम तुम भी नोच लो इस बदन से. तुम्हें भी क्यों पछतावा रहे कि तुम नहीं नोच पाए. प्रजातंत्र को समर्पित यह माटी का चोला तुम्हारे कुछ काम आ गया तो हम अपने आपको धन्य समझेंगे.'
'बड़ी नपी-तुली बातें कर रहे हैं आप इस बार गणतंत्र दिवस की पूर्वसंध्या पर.'
'वह इसलिए कि कल ही दुकान पर नाप-तौल वाले साहब आये थे. कहने लगे कि हम नकली बांट रखते हैं, कांटा मारते हैं, ग्राहकों का शोषण करते हैं. आप ही बताइये कि एक पाव गांठिये से हम कितना शोषण कर लेंगे? जहां लाखों रुपयों का शोषण हो रहा है वहां कोई नाप-तौल वाला नहीं है. ढाई सौ ग्रामसेव-गांठिए वाले के पीछे सरकार पड़ी है. कहने लगे कि वे हमारा चालान करेंगे.'
'क्या खा फिर आपने?'

'हमने कहा कि पूरे बांट देख लो. एक-एक तौल ले लो. थोड़ा भी फर्क हो तो चालान कर देना. हमारी बात सुनकर वे मुस्कुराये. बोले, सरकारी नौकरी कर रहे हैं तो फर्क निकालना हम जानते हैं.'
'यानी कि नाप-तौल के चक्कर में आपका चालान हो ही गया?'
'नहीं हुआ चालान. इस व्यवस्था में जब तक आदमी के बदन पर मांस है, चालान नहीं हो सकता, यह हम जानते हैं. साढ़े तीन सौ ग्राम वे भी ले गए. हमने कहा, ले जाओ साहब, जब सारे लोग ले जा रहे हैं तो नाप-तौल वालों ने क्या बिगाड़ा है?'
'मतलब यही हुआ कि आप बेईमान सिद्ध हो गए.'
'बिलकुल सिद्ध हो गए भइया. ईमानदारी का ठेका तो चील-कौवों ने ले रखा है. सही काम कर रहे हैं फिर भी नुचवा रहे हैं अपने आप को. इसीलिए हम कहते हैं कि हमारी आत्मादुखी है.'
मैंने कहा- 'फिर इस गणतंत्र दिवस पर बच्चों का क्या होगा? नयाड्रेस सिलेगा या नहीं? सफ़ेद जूते आएंगे या नहीं? लाल मोज़े उन्हें मिलेंगे या नहीं?'
वे चुप हो गए. बहुत देर तक सेव-गांठियेवाले डिब्बों को देखते रहे. इस प्रसंग को आगे बढ़ने की मेरी हिम्मत भी नहीं रही.

जागो फिर एकबार महाप्राण

प्रकाश उदय

निराला की असली पहचान उनकी अक्खड़ता और फक्कड़ता में है. बसंत पंचमी के दिन जन्मे इस महाकवि ने जीवन को भी उत्सव ही जाना. सरस्वती पुत्र निराला से लक्ष्मी सदा ही रूठी रही, लेकिन उन्होंने कभी इसकी परवाह भी नहीं की. झंझावातों से घिरे जीवन को वे स्वयं ही गंगा किनारे ले आये. रोटी और लंगोटी के झमेलों से उन्होंने अपनी आत्मा को सदा मुक्त रखा.

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ने अपनी कलम की प्रखरता से पारम्परिक विचारधाराओं के तिलिस्मको तोड़ा है. उनका नाम छायावाद के अलमबरदारों में बेशक शामिल है, लेकिन निराला को नई कविता के जनक के रूप में जानना अधिक श्रेयस्कर होगा. व्यवस्था के प्रति खुशामदी लहजे को सिरे से खारिज करते हुए गुलाब को प्रतीक बनाकर पूंजीवाद को ललकारने का माद्दा सिर्फ निराला में ही था.

कहीं झरने, कहीं छोटी-सी पहाड़ी,
कही सुथरा चमन, नकली कहीं झाड़ी.
आया मौसम, खिलाफ़ारस का गुलाब,
बाग पर उसका पड़ा था रोब-ओ-दाब,
वहीं गंदे में उगा देता हुआबुत्ता,

पहाड़ी से उठे-सर ऐंठकरबोला कुकुरमुत्ता-
“अबे, सुन बेगुलाब! भूल मत जो पायी खुशबू
रंग-ओ-आब, खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट,
डाल पर इतरा रहा है केपीटलिस्ट!
कितनों को तूने बनाया है गुलाम,
माली कर रक्खा, सहाया जाड़ा-घाम.
हाथ जिसके तूलगा,
पैर सर रखकर वो पीछे को भागा.
औरत की जानिब मैदान यह छोड़कर,
तबेले को टट्टू जैसे तोड़कर,
शाहों, राजों, अमीरों का रहा प्यारा
तभी साधारणों से तू रहा न्यारा.
वरना क्या तेरी हस्ती है, पोच तू
कांटो ही से भरा है यह सोच तू
कली जो चटकी अभी
सूखकर कांटा हुई होती कभी.
रोज पड़ता रहा पानी,
तू हरामी खानदानी.

सामाजिक असमानता का उथल-पुथल भरा वातावरण निराला की व्याकुलता को और भी बढ़ा देता था, समता मूलक समाज की स्थापना के लिए उनकी लेखनी ने कवि, लेखक, उपन्यासकार और संपादक की ज़िम्मेदारी बखूबी निभाई. इस मायने में निराला प्रगतिशील आंदोलन की रहनुमाई भी करते रहे. रोज़ी रोटी के लिए हाड़तोड़ मेहनत का दर्द उन्हें बेचैन करता था.
'वह तोड़ती पत्थर' इसी पीड़ा से उपजी उनकी मार्मिक कविता है.

वह तोड़ती पत्थर,
देखा उसे मैंने इलाहाबाद के पथ पर,
वह तोड़ती पत्थर.
कोई न छायादार
पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार,
श्याम तन, भरबंधा यौवन,
नत नयन प्रिय, कर्म-रत मन,
गुरु हथौड़ा हाथ,
करती बार-बार प्रहार,
सामने तरु-मालिका अट्टालिका, प्राकार.
चढ़ रही थी धूप,
गर्मियों के दिन
दिवा का तमतमाता रूप,
उठी झुलसाती हुई लू,
रुई ज्यों जलती हुई भू,
गर्द चिनगीं छा गईं,
प्राय: हुई दुपहर,
वह तोड़ती पत्थर.
देखते देखा मुझे तो एक बार
उस भवन की ओर देखा, छिन्नतार,
देखकर कोई नहीं,
देखा मुझे उस दृष्टि से
जो मार खा रोई नहीं,
सजा सहज सितार,
सुनी मैंने वह नहीं जो थी सुनी झंकार
एक क्षण के बाद वह कांपी सुघर,
ढुलक माथे से गिरे सीकर,
लीन होते कर्म में फिर ज्यों कहा
'मैं तोड़ती पत्थर.'

निराला ने बचपनमें अपनी मां को खोया, युवावस्था में पत्नी को और फिर अपनी इकलौती पुत्री को. इन कठोर आघातों को झेलने के बावजूद निराला का मन मोम सा बना रहा. किसी को भूखा देखते तो अपने हिस्से की रोटी भी उसे दे देते और किसी को ठिठुरता देखते तो तन के कपड़े भी उसे ओढ़ा देते. इसके बाद भी किसी से ना कोई गिला न शिकवा. स्वाभिमान ऐसा कि, मजाल है कोई उन्हें दया का पात्र बना सके. निराला ने अपनी फकीरी को ही अपना ओढ़ना और बिछोना बना लिया, लेकिन अपने सिद्धांतों से कभी समझौता नहीं किया. मानवता और परोपकार के लिए उनके हृदय के द्वार हमेशा खुले रहे.
अपनी पुत्री सरोज की अकाल मृत्यु ने कवि मन को गहरे अवसाद से भर दिया. एक पिता की पुत्री को अंतिम विदाई की कविता 'सरोजस्मृति ' जीवन पर्यन्तनिराला के साथ रही.

धन्ये, मैं पिता निरर्थक था,
कुछ भी तेरे हित न कर सका.
जाना तो अर्थागमोपाय
पर रहा सदासंकुचित-काय
लख कर अनर्थ आर्थिकपथ पर
हारता रहा मैं स्वार्थ-समर.
और मुझ भाग्यहीन की तू संबल
युग वर्ष बाद जब हुई विकल,
दु:ख ही जीवन की कथा रही,
क्या कहूं आज, जो नहीं कही.
हो इसी कर्म पर वज्रपात
यदि धर्म, रहे नत सदा माथ
इस पथ पर, मेरे कार्य सकल
हों भ्रष्ट शीतके-से शतदल!
कन्ये, गत कर्मों का अर्पण
कर, करता मैं तेरा तर्पण.

निराला की आत्मादुखों, पीड़ाओं और अपमान को सहते- सहते 'महाप्राण' में परिवर्तित हो गई. सामाजिक सरोकारों की पैरवी करते हुए इस महाप्राण ने कई तथाकथित मठाधीशों से जमकर लोहा लिया. अंतत: नवजागरण का शंखनाद करते हुए निराला ने जीवन के अंतिम सत्य को गले से लगा लिया और अपने हिस्से के कालखंड को अमर कर दिया.
जागो फिर एकबार!
प्यार जगाते हुए हारे सब तारे तुम्हें
अरुण-पंख तरुण-किरण
खड़ी खोलती है द्वार-
जागो फिर एकबार.

जलांध

प्रस्तुति: गीता गैरोला

चौमासा हमेशा त्योहारों की आमद के साथ बीतता है. श्राद्ध के पंद्रह दिनों में पितृ पूरे साल का भोजन जीमने के साथ साल भर का राशन बांध कर विदा हो गए थे. आस पास के गांवों के बृत्ति ब्राह्मणों के साथ घर के बड़े-बूढ़े, कच्चे-बच्चे सब श्राद्धों का खाना खा के तृप्त थे.

खेतों सग्वाडो में कद्दू पक के पीले पड़ गए. ककड़ियां पीली-लाल हो गयी. दीवाली की धूम के बाद मां-चाचियां दिन भर उड़द की दाल को सिलवटे में पीस कर ककड़ी, भूजेला और लौकी की बड़ियां बनाकर सूखने के लिए पूरा गुठ्यार(आंगन) भर देती थीं. दानों से भरे मक्की को छिलकों से बांध कर दादी ने छज्जा के ऊपर रस्सी बांध के सूखने के लिए लटका दिए थे.

सुबहें और रातें सर्दीली हो गईं. पहाड़ियों पर उगा हरा घास पिंगलाने के बाद सूखने लगा था. रातें साफ़ जगर-मगर तारों से भरे नीले आसमान से टपाटप पाला गिराने लगी थीं. स्लेट की छतें रात भर टपके पाले से भीगी टप-टप टपकती रहती. ये दिन त्योहारों की खुनक से भरे हम बच्चों को बौराये रखते थे.

दूर पहाड़ों से घाम तापने भाबर की तरफ उड़ान भरते मल्यो की डारों (झुंड) से आसमान भरा रहता. डार की डार, मल्यो आते और जिन खेतों में गेहूं की बुआई हो जाती उनमें डाले गेहूं के बीज को मिनटों में चुग जाते. लोग जोर-जोर से ह्वा-ह्वा करते उन्हें उड़ाने की कोशिश करते तो पूरी मल्यो की डार एक खेत से उड़ कर दूसरे खेत में बैठ जाती.

दादी आंखों के ऊपर हथेली की छाया बनाती आसमान की तरफ देखते रोज कहती, "हे राम! बाबा शिवजी के कैलाश में पाला जम गया होगा. मल्यो की डार घाम तापने भाबर को जा रही है. उन दिनों हम बच्चे शाम ढलते ही ठंड के मारे बिस्तरों में दुबक जाते थे.

दादी हमें बरजती "अगर तुम चुपचाप रहोगे, शोर नहीं करोगे तो आज मैं तुमको पितरों की कहानी सुनाऊंगी."

हम सब अपना ओढ़ना समेटे दादी को घेर कर बैठ जाते.

तो सुनो मेरी पोथलियों ये बीते जमानों की बात है. पुराने ज़माने में ऐसा होता था जब परिवार का कोई भी सदस्य मर जाता, वो जलाने के बाद भी लौटकर अपने घर कुशल बात लेने आता जाता रहता.

"दादी मरने के बाद केवल औरतें ही आतीं थीं कि आदमी भी आते थे"? मेरी जिज्ञासाओं का अंत ही नहीं था.

दादी ने पहले कुछ सोचा फिर बोली,"बाबा मैने आदमियों के बारे में ऐसी कोई कथा सुनी तो नहीं है. हे रामां! मरने के बाद भी अपने बच्चों, गाय-बछिया, खेत-खलिहान की चिंता औरतों को ही ज्यादा रहती होगी ये पक्की बात है. जिसे चिंता होगी उसे कहां मुक्ति मिलेगी. हम औरतों के भाग में मरने के बाद भी चैन कहां होता है"? दादी ने गहरी सांस ली और बोली तुम आगे की कथा सुनो-

एक बार की बात है वो सामने वाले अमेली के डांडे के पार किसी गांव में चंदना नाम की लड़की की मां मर गयी. चंदना को भारी शोक हो गया वो दिन रात अपनी मां को याद करके रोती रहती. अपने शोक में उसने खेतों में काम करना भी छोड़ दिया.गोठ में बंधीगाय-बछिया भूख-प्यास से मैं-मैं करके रंभाती रहती. अड़ोस-पड़ोस की चाची-ताई गाय-बाछी को घास-पानी दे देते. पर ऐसा कब तक चल सकता था. पहाड़ों में सबके अपने भी ढेर सारे काम होते हैं. गांव के सब लोगों के खेतों में धान की गुड़ाई निबट गई इधर चंदना के खेतों में घास-पात वैसे ही जमा हुआ था.

एक दिन सुबह उठ कर चंदना ने देखा कि उसके सारे खेतों में गुड़ाई हो गई. उसे बहुत आश्चर्य हुआ कि रातों रात उसके खेतों में गुड़ाई किसने की? गोठ में गाय-बछिया के आगे मुलायम हरी घास का ढेर लगा था. उनका पानी पीने का बर्तन पानी से भरा था. उस दिन के बाद कोई रात को चंदना का हर काम चुपके से कर जाता.

अब चंदना के खेतों का हरेक काम गुड़ाई, निराई, कटाई, मण्डाई गांव में सबसे जल्दी होने लगी. जो भी ये काम करता वो रात को चुपके से आता इसलिए चंदना काम करने वाले व्यक्ति को चाह कर भी देख नहीं पाई थी. लोग चंदना की बढ़ाई करते 'वाह-वाह चंदना तो अपनी मां के मरने के बाद बहुत किसान हो गई.'

एक दिन चंदना ने सोचा जो भी मेरा काम करता है पकड़ कर उसको कुछ खिलाना चाहिये. उसने हलवा बनाया और खेत के किनारे एक घनी झाडी में छिप कर बैठ गई. देखती क्या है कि उसकी मां अंधेरे से निकल कर खेत में आई और काम निबटाने लगी. हे राम! बाबा, जननी का प्राण बेटी पर अटका था.

चंदना अपनी मां को देख कर बहुत खुश हो गई. मां-मां करती झाड़ी से निकल आई. दोनों मां बेटी एक दूसरे के गले लग कर रोने लगीं. दोनों ने मिल कर हलवा खाया और काम करने लगीं. होते करते दिन बीतने लगे. चंदना की मां रात को आती, सुबह धार में भोर का तारा आते ही चली जाती.

एक दिन फूल फटक की जुन्यालीरात में मां चंदना से बोली, "हे बाबा, बहुत दिनों से सिर में खुजली हो रही है, जरा मेरे सिर में जुंए देख दे."

जैसे ही चंदना ने मां के बालों में हाथ लगाया उसे मां के बदन से मांस जलने की तेज बदबू आई. वो वाक्-वाक करके उबकाने लगी बोली, "दूर हट मां तुझसे जलांध आ रही है. मां को चंदना के इस व्यवहार से बहुत बुरा लगा.

वो रोते हुए बोली, "मैंने तुझे पैदा किया अपना दूध पिलाया, पाला-पोषा, सारी जिंदगी तेरे सुख-दुःख में शामिल हुई और आज तुझे मेरे शरीर से जलने की बदबू आ रही है. मैं जा रही हूं आज से मैं कभी लौट कर नहीं आउंगी."

चंदना की मां ने श्राप दिया, "आज के बाद जिन लोगों की मृत्यु हो जायेगी वो कभी लौट कर नहीं आएंगे.

कहते हैं बाबा, उस दिन से मरा हुआ व्यक्ति दुबारा लौटकर नहीं आया. परिवार में लोगों के जिंदा रहते हम उन्हें प्यार करते हैं, उनका मान करते हैं, मरने के बाद उन्हें जब जलायेंगे तो उनसे चिरांध तो आएगी ही ना?

उस दिन से पितृ बुरा मान गए. जो गए सो कभी लौटकर नहीं आए. उसके बाद किसी ने अपने मरे हुए प्रिय जनों को कभी नहीं देखा. कहते हैं वो पितृदेवता बन जाते हैं. साल में एक बार नई फसल होने पर हम अपने पुरखों की जमीन से उगाए अन्न में से उनके हिस्से का नवान्न निकालते हैं."

"जो अनाज हम अलग से पुरखों के नाम पर रखते हैं उसे तो बामण दादा जी ले जाते हैं. हमारे पितृ थोड़ी खाते होंगे, उनके बच्चे खा लेते होंगे."

अपनी देखी बात को कह कर मैने खुदको हलका किया. जानती थी मेरे इस तरह के प्रश्नों के जवाब में दादी कोई ज़बाब ना दे कर मेरी पीठ पर जरूर एक मुक्की मारेगी उसने अपना रोज का काम निबटाया.

उस नीम अंधेरे में दादी ने अपने दोनों हाथ जोड़ कर माथे से लगाए किसी अनाम, अनदेखे, अदृश्य की तरफ मुंह उठा कर फुफुसाई, "हे पितृ देवता, हे भूमि के भुमिया, हे खोली के गणेशा, हे नागराजा हमारे गांव-गली की, जंगल-पानी की, गोठ में बंधे जीवों की, पौन-पंछियों की रक्षा करो, महराज रक्षा करो.

पूर्ण सत्य

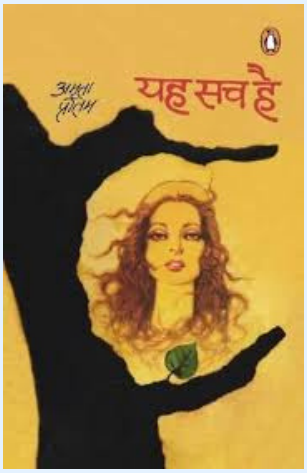

(पूर्ण सत्य के बारे में एक कहानी है ये. अमृता प्रीतम के उपन्यास "यह सच है " में उन्होंने ये कहानी लिखी है. एक चेक कहानी बताते हुए. उषा वर्मा द्वारा उद्धृत.)

स्केच: सुभाष शर्मा

कहानी कुछ यूं है-
कगलर नाम का एक बहुत बदनाम आदमी था, कई हत्याएं कर चुका था, पुलिस उसके पीछे पड़ी थी. एक दिन पुलिस मुठभेड़ में वो मारा गया, उसने आत्मरक्षा के लिए पुलिस वाले पर गोली चलाई और मरते-मरते उस पुलिस वाले ने उस पर भी गोलियां चलाईं और कगलर मारा गया. ये उसकी नौवीं हत्या थी.
मरने के बाद कगलर परलोक में पहुंचा और वहां उसको अदालत में पेश किया गया जहां तीन जज बैठे थे. उन्होंने कगलर से पूछा कि तुम खुद को दोषी समझते हो या निर्दोष और कगलर ने जवाब दिया-"निर्दोष".

तब उन जजों ने गवाह को बुलाया जिस के आने पर जज खड़े हो गए. कगलर हैरान हुआ कि ये कौन गवाह है जिस के आने पर जज खड़े हो जाते हैं.

जजों ने गवाह से कगलर के बारे में बताने को कहा और गवाह ने बताना शुरू किया कि कगलर ने पहली बार एक गुलाब का फूल चुराया था, जिस पर कगलर ने कहा कि वो इरमा नाम की एक लड़की को देने के लिए चुराया था. गवाह हंस कर बोला-"हां, मुझे पता है. क्या तुम जानते हो इरमा के साथ क्या हुआ?" उसकी शादी एक बीमार आदमी से कर दी गयी और इसी दुःख से वो कुछ दिनों बाद मर गयी. कगलर चकित था. तब जज ने कहा, "भगवान आप सब जानते हैं पर ये सब विस्तार से न बता कर बस इसके अपराधोंके बारे में बताइये."

कगलर को तब पता चला के खुद भगवान उसके गवाह हैं. बाद में ढेर सारी बातें हुईं और भगवान ने कगलर के बारे में बताया कि उसने जो हत्याएं कीं वो कभी अनजाने में, कभी पैसों के लिए, एक बेवफा प्रेमिका की, कभी गुस्से में और कभी अचानक हो गईं. अंतिम हत्या इसने आत्मरक्षा के लिए की. पर वो एक अच्छा आदमी था. दयालु और कोमल स्वाभाव का. वादे का पक्का.

इस पर जजों ने भगवान को रोक दिया और उसका निर्णय करने के लिए बगल के कमरे में चले गए तो इस कमरे में भगवान और कगलर रह गए. कगलर आश्चर्यचकित था. उसने भगवान से पूछा कि उसको लगता था परलोक में सारे फैसले भगवान करते हैं, पर यहां भी इंसान ही फैसले करता है? भगवान ने कहा कि इंसानों के कामों का फैसला इंसान ही कर सकते हैं, मैं नहीं कर सकता क्योंकि मैं पूरा सच जनता हूं. जब आप पूरा सच जानते हैं तो कर्मों के फैसले नहीं कर सकते. अपराध जानने के साथ आप अपराध के पीछे का कारण भी जानते हैं तो कैसे किसी को अपराधी ठहरा सकते हैं? इसलिए फैसले वही कर सकते हैं जो अधूरा सच जानते हैं.

लोक पर्व: खतडवा

डॉ. भूपेंद्र बिष्ट

धूप को पेड़ों से जाते हुए देखने के दिन आने को हैं. पहाड़ों पर महीने की शुरुआत संक्रांति (सूर्य के राशि परिवर्तन) की तिथि से ही मान ली जाती है,

जैसे आज भाद्रपद महीने के शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी: अनंत चतुर्दशी है और यहां आश्विन लग भी गया. यह वर्षा काल के इति और शीत काल के अथ की बात भर नहीं है, असोज का महीना पहाड़ में कामकाज का महीना है. कामकाज से आशय कि आसन्न सर्दियों के लिए अभी से एक मुकम्मल तैयारी कर ली जावे. कठिन भूगोल तथा विकट जिजीविषा के चलते भी कुछ उत्स और इत्मीनान को फील किया ही जाय- ऐसा कुछ.
इसमें दुधारू पशुओं के स्वास्थ्य की मंगल कामना करता एक लोक पर्व "खतडवा" बड़े उल्लास और प्रीति भाव से मनाया जाता रहा है. इस दिन पुरुष पशुओं के गोठ की सफाई कर, धूप बाती के साथ खूंटे का तिलक करते हैं और पशुओं के लिए कोमल घास-फूस का बिछावन भी तैयार करते हैं. महिलाएं तो इस दिन पशुओं की अतिरेक में सेवा कर ही सुख पाती हैं, उनको हरा-भरा पौष्टिक चारा हाथ से खिलाती हैं, उन्हें पलाशती (cherish) हैं.

वे गौशाला के पास समवेत स्वर में लोक गीत भी गाती हैं:
"औसों ल्युलो, बेटुलो ल्यूलो, गरगितो ल्युनलो
गाड़ गधेरन बटी, भ्यार, भूढ़ बटी....
इक गोरू बटी गोठ भरी जाओ".....

(अर्थात्, मैं तुम्हारे लिए अच्छा सा पौष्टिक चारा, नदी, खाई व जंगलों से ढूंढ कर लाऊंगी. तुम दीर्घायु रहना. तुम्हारी इतनी वंश वृद्धि हो कि पूरा गोठ (cowshed) भर जाय.)

शाम को बाख़ली (मकानों के समुच्चय के आगे का सभी के लिए बनी बैठकी गाह) के मध्य में एक pole गाड़ कर उसमें चौतरफा सूखी घास लकड़ी, झाड़ी-झिकडे, पिरूल और छिलुके डाल कर पुतला बनाया जाता है, इसे खतड़ू या कथडकू (अभिधार्थ है, दुखदाई वस्तु) कहते हैं. इसे प्रज्वलित करके सभी एकत्रित जन घेर लेते हैं और एक त्रिशूलनुमा हरी लकड़ी, जो फूलों से गुंथी होती है और उसमें अनिवार्यतः कांसे की फूलदार शाख नत्थी रहती है, से पुतले को पीटते हुए कहते हैं :

"निकल बुडी, पस नारायण", यानी दरिद्रता निकले, भगवान का वास हो.

और फिर कच्चे हरे खीरे का प्रसाद सबको खिलाया जाता है. आग समाप्त हो जाने के बाद लोग राख का प्रतीकात्मक टीका भी लगाते हैं और कुछ लोग तप्त कोयले घर को भी ले जाते हैं. दरअसल इसे पहाड़ों में जाड़ों को लेकर अभी से एक हिम्मत जुटाना समझा जाय.

धारचूला व मुनस्यारी के धुर क्षेत्रों में तो इसे बहुत गर्मजोशी से मनाने की प्रथा है.

वहां शौका जनजाति के लोग इस दिन किसी ऊंचे टीले पर चढ़ "पुल्या" नाम से दो पुतले (He & She) बनाते हैं और रात भर नाचने-गाने का उत्सव चलता जाता है.

ऐसा भी माना जाता है कि जो युवती इस शाम खिलखिलाकर हंसती है, वह ससुराल में हमेशा फिर खुशहाल ही रहती है. नेपाल के कुछ इलाकों और सिक्किम में भी इस पर्व को मनाने का रिवाज़ है, हां गढ़वाल अंचल में यह नहीं मनाया जाता.

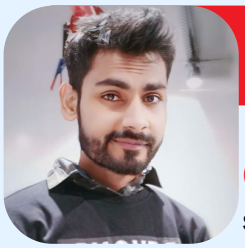

प्रवीन राय

(1)

थक चुके हैं यहां पे चल-चल के.
अब तो मेहमां हैं एक दो पल के.
जाने क्या बात तुम में ऐसी है
देखते हैं जो आंख मल-मल के.
तेरे चेहरे की मुस्कुराहट ये
फूल जैसे खिले हों 'सेमल' के.
आंख कुछ इस तरह छलकती है
मय-क़दे में शराब ज्यूं छल के.
तुम से गुज़रे तो ये हुआ मालूम
जिस्म जैसे बने हों 'संदल' के.
तुम ने पहना है जब से पांवों में
भाव बढ़ने लगे हैं छागल के.
प्यास फिर प्यास रह गई कैसे
हम खड़े थे करीब ही जल के.
हम जो भटके हुए मुसाफ़िर हैं
ख़्वाब दिखलाइयो न मख़मल के.

(2)

मेरी हर बात हर सुख़न में है.
इश्क़ मेरे रहन-सहन में है.
'मीर' होते गले लगा लेते
ऐसा जादू मेरे कहन में है.
सर से पां तक खिली हुई हो यूं
चांद जैसे खिला गगन में है.
अब शराबों में वैसी बात कहां
जो नशा हां तेरे बदन में है.
क्या ग़ज़ब की मिठास लहजे में
क्या अदा चाल और चलन में है.
मन की बातें न पढ़ सकी तुम तो
क्या बताएं कि क्या ये मन में है.

(3)

ये देखो हाल हैं कैसे हमारे.
के हमसे हैं ख़फ़ा रस्ते हमारे.
ज़रा सी बात पर अनबन हुई और
ख़ुदा से हो गए झगड़े हमारे.
तुम्हारा क्या बिगड़ जाता अगर तुम
हमेशा के लिए होते हमारे.
कटेगी रात कैसे यह बताओ
के दिन गुजरेंगे अब कैसे हमारे.
ख़ुदारा ख़्वाब उस में बह रहे थे
जो आसूं आंख से छलके हमारे.
तरस खाओ अजी मासूमियत पर
हमे लौटा दो अब सपने हमारे.

(4)

धड़कनों में खिंचाव दरिया का.
इश्क़ क्या है 'बहाव दरिया का'.
वस्ल जैसे चढ़ाव दरिया का
हिज्र जैसे कटाव दरिया का.
आंख जैसे चिनाब-झेलम हों
होंट जैसे घुमाव दरिया का.
उनका लहजा वो उनकी बातें सब
एकदम से सुभाव दरिया का.
डूब जाए न दिल हमारा अब
देख करके लगाव दरिया का.
.

नवीन सी. चतुर्वेदी

(1)

ये रोज़-रोज़ का ही रूठना-मनाना क्या.
नहीं है प्यार तो फिर प्यार का बहाना क्या.
कभी तो इश्क़ नदी में उतर के भी देखो
नदी किनारे ही पानी को छपछपाना क्या.
न फूल जैसी छुअन और न ख़ार जैसी चुभन
पुरानी यादों को अब ओढ़ना-बिछाना क्या.
अब उसको बांहों में भरने का जी नहीं करता
जो अपना है ही नहीं उस पे हक़ जताना क्या.
हयात जैसी भी गुज़री दुरुस्त गुज़री है
सो बार-बार इसे जोड़ना-घटाना क्या.
तेरे हुज़ूर में तेरी पनाह में रख ले
यों बार-बार मुझे भेजना-बुलाना क्या.

(2)

मात्र इतनी सी हमारी कामना है.
जो नहीं पाया है उसको बांटना है.
वेदना तो दिख रही है हर हृदय में
बस हमें संवेदना को खोजना है.
जिसमें ना कहने का साहस आ चुका हो
सच कहें तो वो भी इक वीरांगना है.
हर गगन हम पर कृपा करता रहेगा
बस हमें अपनी जड़ों को सींचना है.
कोई जब रोके तुम्हें तो रुक न जाना
वर्जना तो सर्जना की गर्जना है.
मिल रहा है अब जो यह सम्मान हमको
यह हमारे पूर्वजों की साधना है.
है तो झूठा पर उसे सच्चा ही कहना
दोगले को दोगला कहना मना है.

(3)

क्षितिज की भांति वह भी कल्पना ही है.
हमें तो फिर भी उसको खोजना ही है.
भले रतिया बिता आना पर आ जाना
हमारा क्या हमें तो जागना ही है.
भले ही प्रेम का आभास भर मिल जाय
किसी खूंटी पै ये मन टांगना ही है.
किसी की वासना अधिकार कहलाये
किसी की कामना को भी मनाही है.
वो बरसाती नदी इतरा ले कितना भी
समय आने पै उसको सूखना ही है.
ये माया, मोह, मद, मत्सर उड़ें कैसे
ये वे तोते हैं जिनको पालना ही है.

(4)

तुमको पल-पल सता नहीं सकता.
सच बताकर रुला नहीं सकता.
सच यही है कि इश्क है तुमसे
मैं बहाने बना नहीं सकता.
यार किस बात पर ख़फ़ा हो तुम
क्या कोई मुस्कुरा नहीं सकता.
जिस पर आता है उस पर आता है
दिल सभी पर तो आ नहीं सकता.
सब सवालों के जानता हूं जवाब
हाथ लेकिन उठा नहीं सकता.
बेच सकता है ख़ुशबुएं ताजिर
ख़ुशबुओं से नहा नहीं सकता.

मयंक अवस्थी

(1)

फिर कहानी में कोई पेंच अटक सकता है.
लौट कर फिर वहीं,बेताल लटक सकता है.
आसमानों की बुलंदी पे चढ़ाने वाला
वक़्त सूरज को समंदर में पटक सकता है.
वो कोई आपके दुश्मन तो नहीं हैं फिर भी
मर्तबा आपका अपनों को खटक सकता है.
ख़ौफ़ तारी है ख़िज़ाओं का चमन में लेकिन
वक़्त की शाख़ का ग़ुंचा तो चटक सकता है.
वो समंदर है, मगर वो भी है इतना प्यासा
एक ही घूंट में दरिया को गटक सकता है.
कितनी शिद्दत से तेरी दीद का प्यासा होगा
जो तेरी खोज में सहरा में भटक सकता है.
जब तू होता है ग़रज़-मंद किसी के आगे
क्या कोई और तेरी तरह मटक सकता है.
अपनी गर्दिश में मेरे पांव पकड़ने वाला
मेरी गर्दिश में मेरा हाथ झटक सकता है.
जाने क्यूं लोग नसीहत तुझे देते हैं 'मयंक'
कोई बालू को भला छान -फटक सकता है.

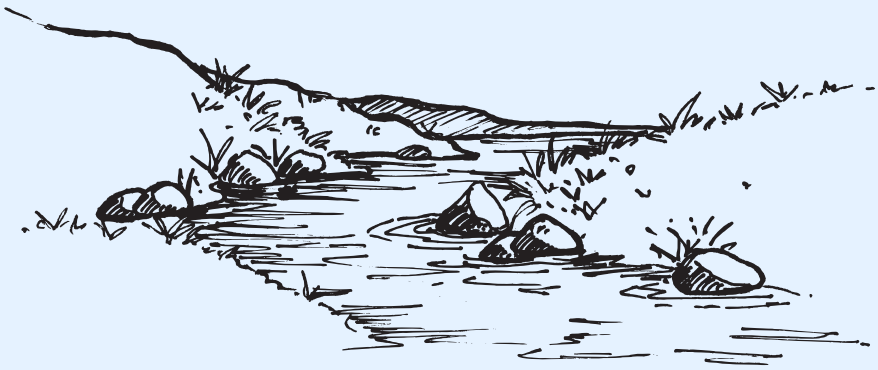

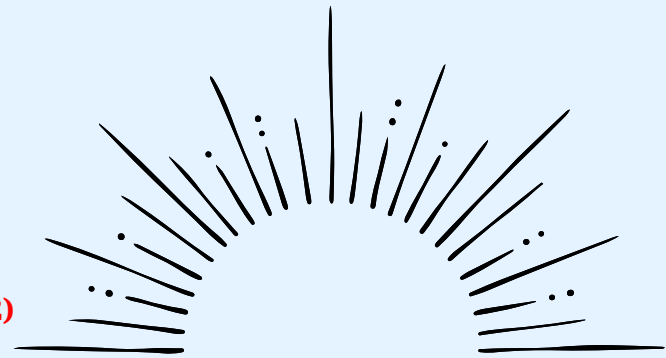

(2)

दिल में ज़हराब, ज़ुबां गुड़ की डली है यारो.
ये जो दुनिया है बस ऊपर से भली है यारो.
आशनाई है सियासत के महल से जिसकी
वो मेरे शहर की बदनाम गली है यारो.
उसको गुलचीं की निगाहों से न देखा कीजै
वो जो खिलती हुई मासूम कली है यारो.
तालियां ऐसे बजाएं कि सुनाई भी पड़े
क्या ये सुरती सी हथेली पे मली है यारो.
आस्तीनों में सरक आए हो दिल से चलकर
बात इस दिल को यक़ीनन ये खली है यारो.
वो नियम तोड़ भी सकता है ये हक़ है उसको
क्योंकि वो शहर का इक बाहुबली है यारो.

(3)

मत आओ फ़क़त कर लो यह इक़रार बहुत है.
तुम फोन पे कह दो कि मुझे प्यार बहुत है.
रस्ते में कहीं जुल्फ़ का साया भी आता हो
अए वक़्त तेरे पांव की रफ्तार बहुत है.
अब दर्द उठा है तो ग़ज़ल भी है ज़रूरी
पहले भी हुआ करता था इस बार बहुत है.
इस खेल में हां की भी ज़रूरत नहीं कोई
लहजे में लचक हो तो फिर इनकार बहुत है.
मुश्किल है मगर फिर भी उलझना मेरे दिल का
आए हुस्न तेरी जुलफ तो खमदार बहुत है.
सोने के लिए क़द के बराबर ही ज़मीं बस
साए के लिए एक ही दीवार बहुत है.

अजय अज्ञात

(1)

कल भी ये अधूरी थी, आज भी अधूरी है.
इश्क़ के बिना यारो, ज़िन्दगी अधूरी है.
जगमगा रहा है घर, जगमगाते बलबों से
ज़ेहन में अंधेरा है, रोशनी अधूरी है.
रहबरी नहीं करती, ज़ख़्म भी नहीं भरती
काम कुछ नहीं आती, शायरी अधूरी है.
आचरण नहीं बदला, सोच भी नहीं बदली
राम-राम जप कर भी, बंदगी अधूरी है.
आलीशान बंगला है, सुख के साजो-सामां हैं
काटती है तन्हाई, हर ख़ुशी अधूरी है.

(2)

ख़ुद ही को दरकिनार किये जा रहे हैं हम.
औरों पे ऐतबार किये जा रहे हैं हम.
क्या-क्या न खो दिया है,सुकूं की तलाश में
क्यूं दिल को बेक़रार किये जा रहे हैं हम?
होगी कृपा प्रभु की भला कैसे सोचिये!
जब पाप बेशुमार किये जा रहे हैं हम.
पर्दा पड़ा है अक़्ल पे, लालच के वश में क्यूं
दामन को दाग़दार किये जा रहे हैं हम.
क्यूं धर्म, जात-पात या मज़हब के नाम पर
इंसानियत पे वार किये जा रहे हैं हम.

(3)

वक़्त ने हर वक़्त ही, ज़ेरो-ज़बर जारी रखा.
फिर भी हर इक हाल में, हमने सफ़र जारी रखा.
चाहता था दिल तो रुक जाना, मगर जारी रखा,
आबले तलवों में ले कर, भी सफ़र जारी रखा.
मुझको कठपुतली बना कर, रक़्स करवाती रही,
ज़िंदगी ने इक तमाशा, उम्रभर जारी रखा.
ज़ालिमों के हौसले तो, और भी बढ़ जायेंगे,
हमने उनके ज़ुल्मों को, सहना अगर जारी रखा,
हादसों से आज तक भी, वो उबर पाया नहीं,
बदगुमानी की तबाही, ने असर जारी रखा.
यूं तो आवारा-मिज़ाजी में ज़रा हम कम न थे,
फिर भी हमने लौट आना अपने घर जारी रखा.
आज भी इन उंगलियों से, आती है ख़ुशबू तेरी,
जादुई-सी उस छुअन ने है असर जारी रखा.
प्यार के दो बोल सुन कर, दिल में ठंडक पड़ गयी,
इस ख़राशे-दिल पे मरहम, ने असर जारी रखा.
चाहे कितनी, कैसी भी, मसरूफ़ियत उस को रही,
शायरी करना 'अजय' ने, ख़ूबतर जारी रखा.
कैसे कहते हैं मुकम्मल शेर या उम्दा ग़ज़ल,
सीखना 'अज्ञात' ने इल्मो-हुनर जारी रखा.

(4)

मैं बंदगी के, बग़ैर ज़िन्दा, न रह सकूंगा.
कि शाइरी के, बग़ैर ज़िन्दा, न रह सकूंगा.
मुझे सुहाता, है रंग भरना, ही ज़िंदगी में
मुसव्वरी के, बग़ैर ज़िंदा, न रह सकूंगा.
नज़र इनायत, की डाल साक़ी, ज़रा इधर भी
मैं मैकशी के, बग़ैर ज़िंदा, न रह सकूंगा.
तुम्हीं से रौनक़, है ज़िंदगी में,ए ख़ैरख़्वाहो
मैं दोस्ती के, बग़ैर ज़िंदा, न रह सकूंगा.
उदासियों के, घने अंधेरे, हैं ज़िंदगी में
मैं रोशनी के, बग़ैर ज़िंदा, न रह सकूंगा.

नीतू भैया की न्यूरो लिंग्विस्टिक प्रोग्रामिंग

हर्ष वर्धन गोयल

कुछ वर्ष पूर्व मुझे एक बहुत ही शक्तिशाली विधि का ज्ञान हुआ जिसके द्वारा हम अपने मन की स्थिति और विचार प्रक्रिया पर नियंत्रण प्राप्त कर सकते हैं. न्यूरोलिंग्विस्टिक प्रोग्रामिंग अर्थात मानसिक निर्देश भाषा अथवा सरल शब्दों में कहें तो अपने व्यवहार को समझ कर अपने मन में वांछित प्रणाली को रोपित करना जिससे हम अपने विचार और उससे उत्पन्न होने वाला भाव, उसके प्रभाव और लंबे समय में अपने स्वभाव में आमूल परिवर्तन कर सकते हैं. यह एक प्रकार की जादुई विधि-सी प्रतीत होती है जो हमारे जीवन के दृष्टिकोण को पूरी तरह से बदल सकती है.

वास्तविक कथा यहां से प्रारंभ होती है. हमारे छोटे चाचा जी के बड़े पुत्र का नाम था नरेंद्र मोहन अग्रवाल. प्यार से हम नीतू कहते थे और चिढ़ा ने के लिए नीतू भैया, बहुत मस्त स्वाभाव के थे हमारे नीतू भैया. एक बार सुबह-सुबह नीतू भैया हमारे घर आये उस के हाथ में नमकीन का पैकेट था, बोले, 'सब लोग मुंह नमकीन कर लो.'

हम सब अचंभित थे, मैंने मुंह नमकीन कर लो वाला वाग्धारा वाक्य पहली बार सुना था, हमने पूछा क्या हुआ नीतू भैया आज सूरज कहां से निकला है जो मुंह नमकीन करा रहे हो?

नीतू भैया अपनी सुपरिचित शैली में बोले, 'सब पास हो जाते है तो मिठाई खिलते हैं, मैं फेल हो गया हूं इसलिए नमकीन खिला रहा हूं इसमें नया क्या है? मीठे का विपरीत नमकीन ही होता है ना?'

उनको पास-फेल की कोई चिंता नहीं थी. हम सबका उस दिन हंसते- हंसते बुरा हाल हो गया था. फिर हमारे परिवार में यह एक मुहावरा सा बन गया. जिसका भी परीक्षा का परिणाम आना होता, हम पूछते आज मिठाई बंटेगी या नमकीन?

समय-समय पर उनकी शरारतों के अनेक समाचार हमें मिलते रहते थे, वह हमारे लिए किसी कॉमिक पात्र के सुपर हीरो से कम नहीं थे. समय के साथ-साथ हम सभी बड़ी कक्षा में आ गए थे नीतू भैया भी दसवीं कक्षा में आ गए थे और उनकी शरारतों का स्तर भी बहुत अधिक बढ़गया था.

हमारे पिताजी का स्वाभाव बहुत कड़क था और मम्मी अक्सर कहती थी कि पिताजी को तो मिलिट्री में कमांडर होना चाहिए था. उनके पास हर एक समस्या का समाधान था और प्रायः उनके समाधान कुछ कठोर प्रतीत होते थे किन्तु एकदम राम-बाण की तरह सटीक होते थे.

एक दिन चाचा को पिताजी से बात करते सुना कि नीतू भैया की अंगूठा चूसने की आदत अभी तक नहीं गयी है और चाचा जी उनका समाधान पूछ रहे थे. हमें तो यह पहले से पता था किंतु चाचा की चिंता थी कि वह बड़ा हो गया है उसकी यह आदत छूट जानी चाहिए. हम मन ही मन डर रहे थे कि पिताजी अब क्या उपाय करेंगे. मन में उत्सुकता कम थी और डर अधिक था.

हर रविवार के दिन की ही तरह, जब हम सब बच्चे खेल रहे तो पिताजी ने नीतू भैया को अपने पास बुलाया. दिल्ली में हमारे घर के पीछे हमारा अपना बहुत बड़ा प्लाट था जिसमें हमने जामुन, अमरुद आदि के कई पेड़ लगाए हुए थे और क्यारी बनाकर कनेर, गैंदे आदि के पौधे लगाकर उसे एक उपवन का रूप दिया हुआ था. घर के पीछे बने इस उपवन की लगभग 5 फुट ऊंची चारदीवारी थी उस दिन पिताजी ने नीतू भैया को लपक कर उठाया और दीवार पर बैठा दिया और बोले जब तक मैं ना बोलू उतरना मत, हां यदि तुम चाहो तो अंगूठा चूस सकते हो, उसके लिए कोई मनाही नहीं है.

सुबह का समय था. नीतू भैया पहले तो बड़े खुश हुए. पिता जी के जाते ही उन्होंने अंगूठा मुंह में दे दिया और चूसने लगे और हमें चिढ़ाने लगे, ऊंची जगह पर बैठ कर, उन्हें बड़ा मजा आ रहा था. धीरे-धीरे सूरज चढ़ गया. लगभग घंटा भर में उनकी आवाज सुनाई दी. ताऊ जी क्या मैं अब उतर जाऊं? पिताजी कमरे में से ही बोले, 'थोड़ा अंगूठा औरचूस लो.'

पिता जी के डर से वह दीवार से कूद भी नहीं सकता था. दस बजते-बजते वे रुआंसे हो गए. उनकी समझ में आ गया कि ताऊजी ने क्यों कहा अंगूठा चूस लो, उसने फिर हिम्मत जुटा कर कहा, 'ताऊजी क्या मैं अब उतर जाऊं?' पिता जी ने फिर वही उत्तर दिया, 'थोड़ा अंगूठा और चूस लो.'

अब वह गिड़गिड़ाने लगा, बोला, 'ताऊजी मुझे और अंगूठा नहीं चूसना है, क्या मैं उतर जाऊं?'पिता जी ने फिर कहा, 'बेटा अब तुम दसवीं में आ गए हो, तुमको बहुत पढ़ाई करनी है जितना अंगूठा चूसना है आज चूस लो.

फिर क्या था धूप और गर्मी से परेशान नीतू भैया के दिमाग की घंटी बज गयी, उन्होंने तुरंत अंगूठा मुंह से निकल लिया और रोते हुए बोले, 'ताऊ जी अब में कभी भी अंगूठा नहीं चूसूंगा मुझे उतार लीजिए प्लीज.' फिर वह जोर-जोर से रोने लगे.

पिता जी भी इसी उत्तर की प्रतीक्षा कर रहे थे वह तुरंत आ गये और स्वयं ही उसे सहारा देकर उतार लिया. पहली बार नीतू भैया को हमने इतने जोर से रोते देखा. पिताजी से लिपटकर वह बहुत रोया फिर बोला, 'ताऊ जी आपने मेरी गंदी आदत छुड़वा दी सभी बच्चे मुझे चिढ़ते थे, पापा मुझे डांटते रहते थे अब से मैं कभी भी अगूंठा नहीं चूसूंगा.'

मेरी मां भी शायद इसी बात की प्रतीक्षा कर रही थी, वह तुरंत ही गर्म-गर्म तैयार नाश्ता ले आयी. उसकी पसंद के आलू के पराठे, दूध के साथ मिठाई में गर्म-गर्म जलेबियां. हमारा पारिवारिक इतिहास इस बात का साक्षी है कि उसके बाद नीटू भैया ने कभी भी अंगूठा नहीं चूसा और हमारे उकसाने पर भी हंसी में टाल दिया. आज नीतू भैया हमारे बीच नहीं हैं किंतु उनकी बात का स्मरण बना हुआ है.

पाश्चात्य जगत के लिए न्यूरो लिंग्विस्टिक प्रोग्रामिंग एक नई विधा हो सकती है किंतु एशिया के लोगों और प्राचीन सभ्यताओं को ये बहुत पहले ज्ञात था कि मन के भाव द्वारा ही हमारी पांच कर्मेन्द्रियां और पांच ज्ञानेंद्रियां नियंत्रित होती हैं और मानसिक मानचित्र में हमारे आंतरिक विचार, ध्वनियां, स्पर्शसंबंधी जागरूकता, आंतरिक उत्तेजना, स्वाद और गंध आदि सम्मिलित होते हैं. यदि हम अपने इस मानसिक मानचित्र को समझ लें और उसमें विभिन्न विधियों द्वारा परिवर्तन कर सकें तो हमारा व्यवहार, हमारी सोच और दृष्टिकोण बदल जाता है.

चांद में दिखती रोना

(माओरी लोक कथा का
प्रीता व्यास द्वारा अनुवाद)

बहुत पुरानी बात है. दादी की दादी की दादी से भी बहुत- बहुत पहले की. सफ़ेद बादलों के देश में समुद्र के किनारे बसे एक गांव (Kainga) में एक सुंदर महिला रहती थी जिसका नाम था रोना. रोना अपने पति और दो बेटों के साथ रहती थी. रोना जितनी सुंदर थी उतनी ही गुस्सैल. उसका पति उससे बहुत प्यार करता था लेकिन रोना का गुस्सैल स्वभाव कभी- कभी उसे बहुत दुखी कर देता. बच्चे भी उसके कोप भाजन बनते रहते थे.

एक दिन की बात है. चांद खूब चमकीला था. रोना के पति ने कहा "इन दिनों रात में अच्छी चांदनी बिखरी होती है, मैं सोचता हूं दोनों बेटों के साथ दूर समंदर में जाऊं, खाड़ी की ओर, वहां भरपूर मछलियां मिल जायेंगीं और लौटने में रात को चांदनी की वजह से कोई दिक्कत भी नहीं होगी."
"अच्छा," रोना ने कहा.

उसके पति और बेटों ने मछली पकड़ने का सामान उठाना शुरू किया. जाल, कांटा, चारा, सब सामान अपनी नौका पे लाद कर वे चलने को हुए तो रोना के पति ने कहा " हम कल रात तक लौटेंगे, हमारे लिए खाना बना कर रखना. "
"अच्छा," रोना ने कहा.

रोना किनारे खड़ी तब तक देखती रही जब तक नाव आंखों से ओझल नहीं हो गई फिर वह लौट आई.

अगले दिन शाम के वक़्त उसने खाना पकाने की तैयारी शुरू की. उन दिनों गैस के चूल्हे, या स्टोव या बिजली के चूल्हे तो होते नहीं थे. लकड़ियां इकट्ठी करके लाना पड़तीं थीं. फिर एक गड्ढे में उन्हें एक के ऊपर एक इस तरह जमाना पड़ता था कि आंच हर ओर बराबर फैल सके. फिर जब लकड़ियां अच्छी तरह से सुलग जायें तो उनके ऊपर कुछ साफ़, एक-से पत्थर जमाए जाते जिन पर मछली, आलू आदि रख कर पकाया जाता. इसे हांगी (Hangi) कहते हैं माओरी.

रोना लकड़ियां लाई, मंझोले आकार के पत्थर लाई, गड्ढे में से पुरानी राख साफ़ की और हांगी की तैयारी शुरू की. उसने गड्ढे में पहले सूखी पत्तियां बिछाईं, फिर छोटी लकड़ियां जमाईं , फिर उनके ऊपर कुछ ज़्यादा बड़ी और मोटी लकड़ियां लगाईं. जंगल में मिलने वाले छोटे सफ़ेद फूलों वाले एक ख़ास पेड़ काइकोमाको (Kaikomako)की लकड़ी के टुकड़े एक दूसरे सफ़ेद छाल वाले पेड़ महोइ (Mahoe) की लकड़ी के टुकड़े से रगड़ कर आग पैदा की. फिर ऊपर पत्थर जमाए. इस तरह हांगी तैयार करके वह अपने परिवार जनों के लौटने की राह देखने लगी.

पकाने के लिए रखे पत्थर लाल दहक उठे. अंधेरा भी बढ़ने लगा. अब समंदर में दूर तक देख पाना कठिन था. रोना को दूर समंदर से गाने की आवाजें सुनाई दीं. वह खुश हो गई कि ये लोग लौट आये. वह हांगी की ओर लौटी. बस अब उसे दहकते पत्थरों पर पानी का छींटा दे कर पकने को मांस और तरकारी रखना थी. जब तक नाव किनारे आएगी खाना भी तैयार हो जाएगा.

वह घर के अंदर गई पानी का तुंबा लेने. अरे तुंबा तो ख़ाली पड़ा था. अंदर पानी के बर्तन सब ख़ाली थे.

"ओह ये तो बड़ी गड़बड़ हो गई, खैर अब भी वक़्त है मैं झटपट झरने तक जा कर पानी ले आऊं, " उसने सोचा और तुंबा उठा कर झरने की ओर तेज़ क़दमों से चल पड़ी. झरना ज़्यादा दूर नहीं था. रात हो चुकी थी इसके बावज़ूद वह रास्ता साफ़-साफ़ देख पा रही थी क्योंकि हर जगह सफ़ेद चांदनी छिटकी हुई थी. ज़रा सी देर में ही वह रास्ते के लगभग आखिरी सिरे तक जा पहुंची.

अचानक चांद बादल के एक टुकड़े के पीछे जा छिपा. पल में ही घुप्प अंधेरा हो गया. हाथ को हाथ न सूझे. रोना को कुछ भी नज़र नहीं आ रहा था. वह अंदाज़ से आगे बढ़ी और एक पेड़ की ज़मीन से बाहर उठ आई जड़ से टकरा कर गिर पड़ी. उसकी ठुड्डी एक पत्थर से जा टकराई खून निकल आया. दर्द की तेज़ लहर ने रोना को रुला दिया. स्वाभाविक था कि उसे चांद पर गुस्सा आ गया. उसने चांद को एक मोटी सी गाली दी "पोकोकोहुआ" (Pokokohua) यानि तेरा मुंह झुलस जाए.

चांद ने गाली सुनी तो उसे बड़ा गुस्सा आया. वह बादल की ओट से निकला, ज़रा सा झुका, हाथ बढ़ा कर रोना की बांह पकड़ी और उसे ऊपर खींच उठा. रोना घबरा गई. बचने के लिए उसने पास ही खड़े नायो (Ngaio) पेड़ की डाली थाम ली. चांद ने और ज़ोर से रोना को ऊपर खींचा और रोना की पकड़ भी डाली पर और कड़ी हो गई. लेकिन भला चांद की ताक़त से जीत पाती रोना? चांद ने इतनी ज़ोर से खींचा कि रोना तो रोना उसके साथ नायो का पूरा पेड़ तक उखड़ कर ऊपर जा पहुंचा.

उधर दूसरी ओर इतनी देर में नाव किनारे आ लगी. उसके पति और बच्चों ने देखा कि घर के आगे हांगी में से लपटें उठ रही हैं, पास ही बिना पका कच्चा सामान पड़ा है और रोना का दूर-दूर कोई नामो निशान नहीं. उन्होंने खूब आवाज़ें दीं, आसपास खोजा पर सब व्यर्थ. अचानक एक बेटे की नज़र चांद पर पड़ी, वह चिल्लाया, “ऊपर देखो, फाया (Whaea यानि मां) तो चांद में है. उसके पति ने देखा तो समझ गया कि हो न हो आज रोना को अपने गुस्से का फल भुगतना पड़ा है. बस उस दिन से आज तक जब भी पूनम का चांद निकलता है उसमें रोना दिखाई देती है -एक हाथ में नायो पेड़ और एक हाथ में तुंबा पकड़े हुए.

होली के लोक गीत

1.

मथुरा वृंदावन बीच डगर में थई-थई खेलें सांवरे.
अरे कैसे आवें ग्वालिनें, और कैसें आवें ग्वाल?
मथुरा वृंदावन बीच डगर में थई-थई खेलें सांवरे.
अरे नाचत आवें ग्वालिनें, अरे नाचत आवें ग्वालिनें,
और गावत आवें ग्वाल.
मथुरा वृंदावन बीच डगर में थई-थई खेलें सांवरे.
अरे कहां से आवें ग्वालिनें, अरे कहां को जावें ग्वालिनें?
और कहां से आवें ग्वाल?
मथुरा वृंदावन बीच डगर में थई-थई खेलें सांवरे.
अरे मथुरा से आवें ग्वालिनें, अरे मथुरा से आवें ग्वालिनें,
और गोकुल से आवें ग्वाल.
मथुरा वृंदावन बीच डगर में थई-थई खेलें सांवरे.
अरे का करती हैं ग्वालिनें, अरे का करती हैं ग्वालिनें?
और का करते हैं ग्वाल?
अरे गऊ चरावें ग्वालिनें, अरे गऊचरावें ग्वालिनें,
और माखन खावें ग्वाल.
मथुरा वृंदावन बीच डगर में थई-थई खेलें सांवरे.

2.

रसिया को नार बनावो री रसिया को.
कटि लहंगा गल माल कंचुकी,
वाको चुनरी शीश उढाओ री.
रसिया को नार बनावो री रसिया को.
बांह बड़ा बाजू बंद सोहे, वाको नकबेसर पहराओ री.
रसिया को नार बनावो री रसिया को.
लाल गुलाल दृगन बिच काजर, वाको बेंदी भाल लगावो री.
रसिया को नार बनावो री रसिया को.
आरसी छल्ला और खंगवारी, वाको अनपट बिछुआ पहराओ री.
रसिया को नार बनावो री रसिया को.
नारायण करतारी बजाय के, वाको जसुमति निकट नचाओ री.
रसिया को नार बनावो री रसिया को.

आधुनिक संस्कृत समीक्षा का नया स्वर

समीक्षक: डॉ. कौशल तिवारी

अर्वाचीन संस्कृत साहित्य का आकाश विविध विधा रूपी नक्षत्रों से भरा हुआ जगमगा रहा है. कथ्य और शिल्प में इधर परिवर्तन भी देखने को मिलता है. संभवत: इसका कारण यह रहा कि स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् के समय में जब तकनीकी उन्नति के कारण विश्व आस-पास सिमट आया तो संस्कृत कवि का परिचय केवल भाषाई विविधता वाले भारत देश की संस्कृतेतर भाषाओं के साहित्य से ही नहीं हुआ अपितु वह विदेशी भाषाओं के साहित्य के भी संपर्क में आया. उन भाषाओं के साहित्य का प्रभाव उसके लेखन पर देखने को मिलता है. साथ ही अब संस्कृत कवि स्तुति-प्रशस्ति मात्र में अपनी प्रतिभा को नहीं खपाना चाहता अपितु वह अपने काव्यों में समकालीन घटनाओं को देखता हुआ भी उस काव्य को सर्वकालिक बनाता है.

संस्कृत समीक्षकों ने 20 वीं एवं 21 वीं सदी के संस्कृत साहित्य को स्वर्ण युग के नाम से अभिहित किया है. वर्तमान में कई वरिष्ठ कवियों के साथ युवा कवि भी सतत् रचनाएं लिख रहे हैं. ये रचनाएं पाठकों द्वारा पढ़ी और सराही भी जा रही हैं. कई पत्र-पत्रिकाएं निरंतर प्रकाशित हो रही हैं. साथ ही इन रचनाओं पर कई विश्वविद्यालयों से शोध कार्य भी हो रहे हैं.

युवा समीक्षक डॉ.अरुण कुमार निषाद उत्साही अध्येता हैं. डॉ. निषाद अर्वाचीन संस्कृत साहित्य पर आलेख लिखते रहे हैं. इसके पूर्व भी डॉ. निषाद के दो ग्रन्थ 'आधुनिक संस्कृत साहित्य की महिला रचनाधर्मिता' और 'आधुनिक संस्कृत साहित्य: विविध आयाम' प्रकाशित हो चुके हैं. प्रस्तुत ग्रंथ में अर्वाचीन संस्कृत साहित्य पर समय-समय पर डॉ. अरुण कुमार निषाद द्वारा लिखित 25 आलेखों का संकलन करके एक साथ प्रकाशित करवाया जा रहा है, जो निश्चित ही प्रशंसनीय है. प्रस्तुत ग्रंथ को तीन भागों गद्य, पद्य एवं नाट्य खंड में विभाजित किया गया है. खंड में चार आलेख संकलित हैं. ये चारों आलेख कथा साहित्य पर आधारित हैं. पद्य खंड में 20 आलेखों का संकलन किया गया है. मुक्तकच्छन्द कविता, गजल गीति, हाइकु, बाल साहित्य आदि नवीन विधाओं की रचनाओं पर युवा समीक्षक ने उपयोगी जानकारी उपलब्ध करवाई है. साथ ही पारंपरिक छंदों में प्राचीन एवं नवीन विषयों पर आधारित आलेख भी यहां संकलित हैं. नाट्य खंड में 2 आलेख हैं.

ये सारे आलेख न केवल कृति की विषय-वस्तु का परिचय ही देते हैं अपितु उसके कथ्य एवं शिल्प को भी उद्घाटित करते हैं. ये आलेख पाठक वर्ग के साथ-साथ शोध के इच्छुक जनों के लिए भी अत्यंत उपयोगी सिद्ध होंगे. अर्वाचीन संस्कृत साहित्य की जीवंतता का प्रतीक यह ग्रंथ समीक्षा के क्षेत्र में एक नया सोपान बनेगा.

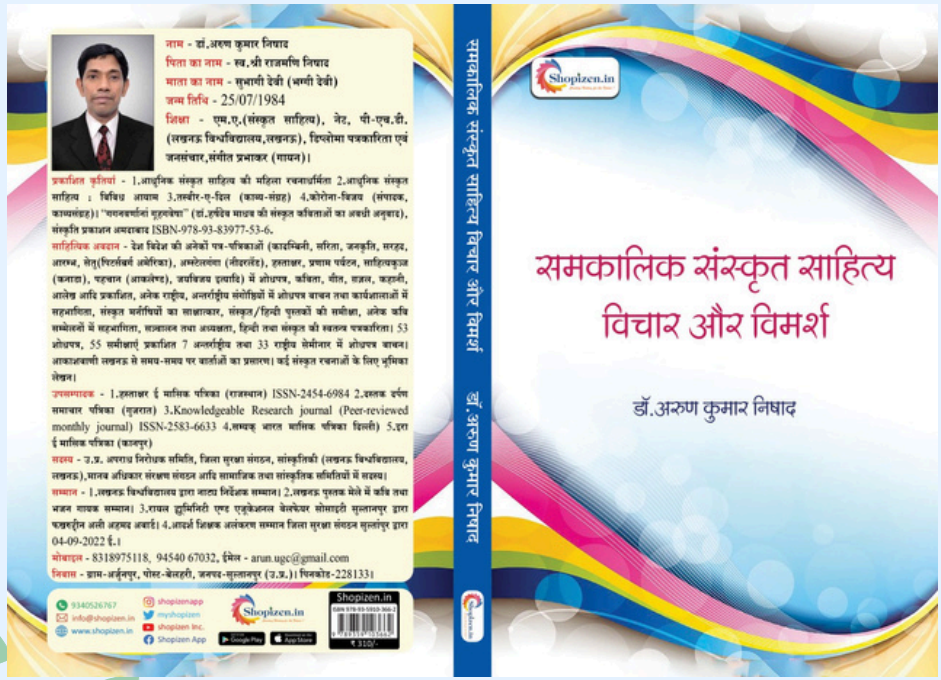

लेखक- डॉ.अरुण कुमार निषाद / पुस्तक का नाम- समकालिक संस्कृत साहित्य विचार और विमर्श / विधा-समीक्षा ग्रंथ / प्रकाशन- शोपिजन प्रकाशन, अहमदाबाद (गुजरात) / पृष्ठ संख्या-123 / अंकित मूल्य- 310 रुपया

पागल कौन

एक राजा था. एक बार राजा ने हीरे-मोतियों से जड़ी हुई एक बहुमूल्य छड़ी उस पागल को दे दी जो शमशान में रहता था.

राजा ने कहा कि इसे रख लो और जब कोई तुमसे भी बडा पागल तुम्हें मिल जाए तो उसे दे देना.

कुछ दिनों के बाद पागल ने सुना कि राजा बीमार है, मृत्यु शैया पर है, वह राजा के पास पंहुचा और पूछा- कैसा हाल है?

राजा – अब चलने की तैयारी है.

पागल - कहां जायेंगे?

राजा - यह तो मालूम नहीं.

पागल - चलो कोई बात नहीं लेकिन जहां भी जाएंगे, कितनी सेना, हाथी-घोड़े, राज कोष साथ ले जायेंगे?

राजा - इस यात्रा में धन साथ नहीं होता.

पागल - पर रानी, राजकुमार और मंत्री के बिना तो आपका काम चलेगा नहीं?

राजा - तू पागल है, इतना भी नहीं जानता कि अंतिम यात्रा में कोई किसी के साथ नहीं जाता?

पागल - तो अकेले ही सही, यही बता दीजिये कि किस सवारी से जाना है?

राजा - रे मूर्ख! इस यात्रा में सवारी भी साथ नहीं जाती.

पागल हंसने लगा. धत्तेरे की! तो दुनियां को दुख दे कर जो दौलत एकत्र करता रहा, वह बेकार ही रही?

ले, अपनी छड़ी संभाल, मुझसे बड़ा पागल तो तू ही है.

हिंदी त्रैमासिक
पहचान
देश से हम, हमसे देश

रचना आमंत्रण

अंतर्राष्ट्रीय, हिंदी त्रैमासिक ऑन लाइन पत्रिका ''पहचान'' हेतु आप भी रचनाएं भेज सकते हैं.

आलेख, समीक्षा, साक्षात्कार, शोध परक लेख, व्यंग्य, संस्मरण, यात्रा वृत्तांत, लोक साहित्य, बाल साहित्य, कविता, गीत, कहानी, लघु कथा आस्था, धरोहर, इतिहास, कला, विज्ञान, स्वास्थ्य आदि साहित्य की सभी विधाओं में रचनाओं का स्वागत है.

रचनाएं वर्ड फाइल में अपनी तस्वीर और परिचय सहित भेजें. लेख के लिए 800 से 1,000 और कहानी के लिए अधिकतम शब्द सीमा 1600 शब्द है.

यदि आप अपना खींचा कोई चित्र पत्रिका के कवर पेज या फिर तिमाही चित्र चयन के लिए विचारार्थ भेजना चाहें तो अपने परिचय के साथ चित्र के बारे में बताते हुए ई – मेल कर सकते हैं.

संपादक मंडल का निर्णय अंतिम निर्णय होगा, इसमें विवाद की गुंजाईश नहीं होगी.

editor@pehachaan.com